संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 126
पृष्ठ 8
शनिवार
24 जनवरी 2026
प्रात: संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित

Email : shaharsamta@gmail.com

Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- आलसी बच्चों को आत्मनिर्भर...

विचार- ईरान में नरसंहार और वैश्विक दोहरे...

खेल- टी20 विश्व कप से हटने पर बांग्लादेश...

नेताजी का नाम आते ही हर भारतीय के मन में साहस और संकल्प जाग उठता है : योगी

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज हजरतगंज स्थित नेताजी सुभाष चौक पर पहुंचे। स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी के साहसिक नेतृत्व और उनके योगदान को याद किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भारत माता के ऐसे महान पुत्र की पावन जयंती है, जिनका नाम आते ही हर भारतीय के सामने उनका विराट व्यक्तित्व स्वतः उभर आता है। उत्तर प्रदेश सरकार और प्रदेश की जनता की ओर से वह नेताजी के श्रीचरणों में नमन करते हैं। देश के प्रति उनके अतुलनीय योगदान के लिए कृतज्ञता व्यक्त

करते हैं। नेताजी का जीवन हर भारतीय को विपरीत परिस्थितियों में भी देशद्रोही और देशविरोधी ताकतों के सामने न झुकने का दृढ़ संकल्प देता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 1897 में एक प्रतिष्ठित अधिवक्ता परिवार में जन्मे नेताजी को बचपन में ही उच्च शिक्षा के लिए ब्रिटेन भेजा गया। आईसीएस परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के बावजूद उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत की नौकरी ठुकरा दी। पूरी तरह भारत के स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश का स्वतंत्रता आंदोलन नई दिशा ले रहा था, उसी दौर में नेताजी ने क्रांतिकारियों के अग्रणी नेता के रूप में आजादी की लड़ाई को नई ऊर्जा और दिशा दी। उनका प्रभाव भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी साफ दिखाई देता था।मुख्यमंत्री ने कहा कि नेताजी का आह्वान "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" आजादी के आंदोलन का मंत्र बन गया। उनका उद्घोष "दिल्ली चलो" आज भी हर भारतवासी को प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि "कदम–कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा" जैसे गीत आज भी भारतीय सेना के दीक्षांत समारोहों में पूरे गर्व के साथ गाए जाते हैं। यह भी नेताजी की ही देन है, जिसने सैनिकों के मनोबल को हमेशा ऊंचा रखा। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत के भीतर ही नहीं, बल्कि जर्मनी, जापान सहित दुनिया के कई देशों में जाकर नेताजी ने आजादी के आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया, जो हर भारतीय के लिए स्मरणीय है।उनकी जयंती पर उन्हें स्मरण करने, कृतज्ञता व्यक्त करने और नमन करने का यह अवसर हम सभी के लिए प्रेरणादायी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट साझा करते हुए नेताजी के ऐतिहासिक नारे "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इस महाघोष ने देश के स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा और स्पष्ट दिशा दी। सीएम योगी ने लिखा आजाद हिंद फौज के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने अपने विचारों और संघर्ष से भारतीय युवाओं में देशभक्ति की भावना को और मजबूत किया। उनके योगदान ने आजादी की लड़ाई को निर्णायक मोड़ देने में अहम भूमिका निभाई।

पीएम मोदी बोले–

एलडीएफ और यूडीएफ ने केरल को भ्रष्टाचार के दुष्चक्र में धकेला

तिरुवनंतपुरम (केरल), एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को तिरुवनंतपुर नगर निगम में भाजपा की ऐतिहासिक की जीत की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) की ओर से दशकों से की जा रही उपेक्षा के अंत और विकास व सुशासन के नए युग की शुरुआत का संकते है। प्रधानमंत्री ने दोनों पर भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन को बढ़ावा देने का भी आरोप लगाया। तिरुवनंतपुरम में प्रधानमंत्री ने एक जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा, एलडीएफ और यूडीएफ ने अलग–अलग तरीकों से केरल को भ्रष्टाचार, कुप्रबंधन और तुष्टिकरण की राजनीति के दुष्चक्र में धकेल दिया है। भले ही उनके झंडे और प्रतीक अलग हों, लेकिन उनकी राजनीति और एजेंडा

लगभग एक जैसे हैं– बेलगाम भ्रष्टाचार, जवाबदेही की कमी और विभाजनकारी सांप्रदायिकता को बढ़ावा देना। दोनों दल जानते हैं कि हर पांच साल में उन्हें शासन का मौका मिलता है। लेकिन बुनियादी समस्याएं जस की तस बनी रहती हैं। उन्होंने आगे कहा, दशकों तक एलडीएफ और यूडीएफ ने तिरुवनंतपुरम की उपेक्षा की और शहर को बुनियादी सुविधाओं से वंचित रखा। वाम दल और कांग्रेस जनता की जरूरतों को पूरा करने में लगातार नाकाम रहे हैं। लेकिन हमारी टीम भाजपा ने विकसित तिरुवनंतपुरम की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है। इस शहर के लोगों से मैं कहना चाहता हूं– भरोसा रखें, जिसका इतंजार लंबे समय से था, अब वह बदलाव आने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तिरुवनंतपुरम नगर निगम चुनाव में भाजपा की जीत को ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि यह जीत सुशासन की जीत है और विकसित केरल के संकल्प की जीत है।

कई इलाकों में झमाझम हुई बारिश, पारा गिरा, धुला प्रदूषण खराब श्रेणी में पहुंची हवा

नई दिल्ली,एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में मौसम का मिजाज अचानक बदल गया है। शुक्रवार की सुबह राजधानी और नोएडा समेत आसपास के इलाकों में बारिश हुई। वहीं, गरज के साथ तेज हवाएं चल रही हैं। मौसम विभाग ने पहले से ही गरज के साथ बौछारें पड़ने की भी चेतावनी जारी की थी। इन मौसमी बदलावों के कारण तापमान में गिरावट दर्ज की जा सकती है। यह मौसमी बदलाव अगले कुछ दिनों तक जारी रह सकता है। जनवरी का महीना आमतौर पर कड़ाके की ठंड के लिए जाना जाता है, लेकिन इस बार दिन का तापमान काफी ऊपर चढ़ रह था। लेकिन शुक्रवार को मौसम ने करवट ली है। आज एक मजबूत और सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ उत्तर भारत पर असर डाल रहा है। ऐसे में दिल्ली में भी हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना जताई गई थी, जिसका असर भी सुबह से ही दिखने को मिल राह है। बारिश के साथ गरज–चमक और 40–50 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से तेज हवा भी चलने के आसार जताए गए थे। बारिश के बाद दिन का तापमान गिरकर 19–21 डिग्री तक पहुंच सकता है। न्यूनतम तापमान भी 6–8 डिग्री के आसपास आ जाएगा। इसके बाद ठंड एक बार फिर लौटेगी और सुबह–रात में ठिठुरन बढ़ेगी।

बिना शर्त हाईकोर्ट में माफी मांगें, जज के साथ बहस को लेकर वकील को शीर्ष कोर्ट का निर्देश

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को झारखंड के एक वकील को हाईकोर्ट के समक्ष बिना शर्त माफी मांगने को कहा। शीर्ष कोर्ट ने मामले का स्वतरू संज्ञान लिया था। दरअसल, अदलात की कार्यवाई के दौरान वकील ने कथित तौर पर जज से कहा था– हद पार मत करिए। बाद में इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। चीफ जस्टिस (सीजेआई) सूर्य कांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने याचिका का निपटारा किया। उन्होंने वकील महेश तिवारी को पांच जजों की हाईकोर्ट की बेंच के सामने बिना शर्त माफीनामा दाखिल करने की अनुमति दी। वकील के खिलाफ पिछले साल अक्तूबर में अवमानना का नोटिस जारी किया गया था। शीर्ष कोर्ट ने हाईकोर्ट से माफी पर सहानुभूतिपूर्व विचार करने का अनुरोध किया। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि आपराधिक अवमानना नोटिस से व्यथित याचिकाकर्ता हमारे सामने हाजिर हैं। सुनवाई के दौरान बताया गया कि याचिकाकर्ता का इरादा माननीय जज का अपमान करना या न्यायिक प्रक्रिया में बाधा डालना नहीं था। वरिष्ठ वकील ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता अपने किए पर गहराई से खेद प्रकट कर रहा है। याचिकाकर्ता बिना शर्त माफी मांगने के लिए तैयार है। शीर्ष कोर्ट की बेंच ने कहा, हम याचिकाकर्ता को हाईकोर्ट के समक्ष बिना शर्त माफीनामा प्रस्तुत करने की अनुमति देते हुए इस मामले का निपटारा करते हैं। हम हाईकोर्ट से अनुरोध करते हैं कि वह माफीनामा पर सहानुभूति के साथ विचार करे। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ वकील सिद्धार्थ दवे पेश हुए। उन्होंने कहा कि याचिकाकर्ता बेहद पश्चाताप कर रहा है और बिना शर्त माफी मांगने के लिए तैयार है।

शिवजराज सिंह चौहान ने राहुल गांधी के मजदूर बनने पर कसा तंज

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोलते हुए उन पर विकसित भारत–रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) अधिनियम को लेकर नाटक करने का आरोप लगाया और कहा कि कांग्रेस सांसद को इस कानून का नाम तक नहीं पता। चौहान ने ट्विटर पर राहुल गांधी के उस भाषण का एक वीडियो साझा किया, जो उन्होंने रचनात्मक कांग्रेस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एमजीएनआरईजीए श्रमिक सम्मेलन में दिया था।

अनिल चौहान बोले–

भारत ने शुरू की भविष्य के युद्ध की तैयारी

नई दिल्ली, एजेंसी। देश की सैन्य तैयारी के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ तब सामने आया जब चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने मिलिटरी क्वॉन्टम मिशन पॉलिसी फ्रेमवर्क जारी किया। यह दस्तावेज आने वाले दशकों की युद्ध सोच का खाका है। इसका मकसद साफ है कि भारतीय सशस्त्र बल तकनीक केंद्रित भविष्य के युद्ध के लिए आज से ही खुद को तैयार करें। हम आपको बता दें कि इस नीति के तहत क्वॉन्टम तकनीक के चार मजबूत स्तंभों को थल सेना, नौसेना और वायु सेना में एक साथ जोड़ा जाएगा। इनमें क्वॉन्टम संचार, क्वॉन्टम कंप्यूटिंग, क्वांटम सेंसिंग और मेट्रोलॉजी तथा क्वॉन्टम पदार्थ और उपकरण शामिल हैं। लक्ष्य यह है कि भविष्य के रणक्षेत्र में

सूचना की रफ्तार, गणना की ताकत और सेंसर की सटीकता में भारत किसी से पीछे न रहे बल्कि तकनीकी बढ़त हासिल करे। इस अवसर पर थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी, वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह और चीफ ऑफ इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ एयर मार्शल अशुतोष दीक्षित मौजूद रहे। यह उपस्थिति अपने आप में संदेश थी कि यह नीति तीनों सेनाओं की साझा प्राथमिकता बनेगी। हम आपको बता दें कि दस्तावेज में राष्ट्रीय क्वॉन्टम मिशन के साथ सैन्य प्रयासों के तालमेल पर विशेष जोर दिया गया है। इसमें स्पष्ट रोडमैप है कि किस तरह नागरिक और सैन्य क्षेत्रों के साझा प्रयासों से इस उभरती तकनीक को रक्षा ढांचे में शामिल किया जाएगा। अलग–अलग मंत्रालयों और सरकारी क्षेत्रों के विशेषज्ञों को मिलाकर समर्पित संचालन निकाय बनाने की बात भी कही गई है। यह नीति इस सच्चाई को रेखांकित करती है कि भविष्य के युद्धक्षेत्र में संयुक्तता और एकीकरण के बिना तकनीकी वर्चस्व संभव नहीं है। देखा जाये तो यह नीति रणनीतिक चेतावनी भी है। दुनिया तेजी से उस दौर में जा रही है जहां युद्ध बंदूक और टैंक से नहीं बल्कि एल्गोरिदम और क्यूबिट से जीते जाएंगे। ऐसे में भारत का यह कदम निर्णायक है। सवाल यह नहीं कि क्वॉन्टम तकनीक आएगी या नहीं, सवाल यह है कि कौन इसे पहले और बेहतर तरीके से हथियाता है। क्वॉन्टम नीति का मतलब है रक्षा व्यवस्था में ऐसी तकनीकों का प्रवेश जो परंपरागत सोच को तोड़ देती हैं।

क्वॉन्टम संचार दुश्मन की जासूसी को लगभग असंभव बना सकता है। क्वॉन्टम कंप्यूटिंग आज की सबसे ताकतवर मशीनों से भी लाखों गुना तेज गणना की क्षमता रखती है। क्वॉन्टम सेंसिंग से पनडुब्बियों की पहचान, मिसाइलों की सटीकता और सीमा पर गतिविधियों की निगरानी एक नए स्तर पर पहुंच सकती है।

डीडवाना में बोले मोहन भागवत–

दुनिया को मर्यादा और आचरण का मार्ग दिखाना भारत का दायित्व

डीडवाना,एजेंसी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत राजस्थान के दौरे पर हैं। डीडवाना में उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों पर बात करते हुए कहा कि दुनिया को मर्यादा और आचरण सिखाने का काम भारत का है। डीडवाना पहुंचे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि दुनिया के बाकी हिस्सों को जीवन और समाज से जुड़ी एक महत्वपूर्ण सच्चाई का ज्ञान नहीं है, जिसे हमारे पूर्वज भली–भांति जानते थे। उन्होंने कहा कि भले ही लोग बाहरी रूप से एक–दूसरे से अलग दिखाई देते हों लेकिन मूल रूप से सभी एक हैं।

आरएसएस प्रमुख ने कहा कि हम एक हैं का अर्थ यह है कि हर व्यक्ति हमारा अपना है। जब समाज में यह भावना विकसित होती है तो जीवन में स्वतः ही गरिमा और सम्मान का भाव आ जाता है। धर्म पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि संसार में जीवन एक साथ, समानांतर रूप से चलता रहता है और जो तत्व इस जीवन को संचालित करता है, वही धर्म कहलाता है। दुनिया के अन्य हिस्से इस धर्म की अवधारणा को नहीं समझ पाए क्योंकि वे इसके पीछे छिपे सत्य को नहीं जानते। उन्होंने कहा कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति की यही विशेषता रही है कि हमारे पूर्वजों ने इस सत्य को पहचाना और उसी के आधार पर जीवन जीने का मार्ग दिखाया।

प्रधानमंत्री इतिहास को तोड़–मरोड़कर पेश करने में सबसे माहिर–जयराम

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर शुक्रवार को तीखा हमला बोला। कांग्रेस ने कहा कि प्रधानमंत्री इतिहास को तोड़–मरोड़कर पेश करने में सबसे माहिर हैं। कांग्रेस ने ये भी कहा कि राष्ट्रगान के इतिहास से भी छेड़छाड़ की कोशिश की गई और बीते महीने संसद में वंदे

मातरम पर चर्चा के दौरान रवींद्रनाथ टैगोर का भी अपमान करने का प्रयास किया गया। कांग्रेस संचार प्रभारी और महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में आरोप लगाया कि पीएम मोदी व्यवस्थागत तरीके से महात्मा गांधी की यादों और विरासत को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। जयराम रमेश ने पोस्ट में लिखा, बीते महीने संसद में राष्ट्रगीत पर चर्चा के दौरान पीएम मोदी और उनके सहयोगी बेनकाब हो गए। राष्ट्रगान के इतिहास से भी छेड़छाड़ की कोशिश की गई और इस दौरान गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का भी अपमान का प्रयास किया गया। आज 23 जनवरी 2026 के दिन देश नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 129वीं जयंती मना रहा है, जिन्होंने 1937 में वंदे मातरम की पंक्तियों को लेकर हुए विवाद को सुलझाने में मुख्य भूमिका निभाई, जिसका पीएम मोदी ने जानबूझकर जिक्र नहीं किया। जयराम रमेश ने लिखा नेताजी सुभाषचंद्र बोस के परपोते और इतिहासकार सुगत बोस ने लिखा कि नेताजी ने 2 नवंबर 1942 को बर्लिन में फ्री इंडिया सेंटर का उद्घाटन किया था और उस दौरान उन्होंने राष्ट्रगान के दौरान पर जन गण मन गाया था।

पूर्व सांसद के ड्राइवर के भाई की धूमनगंज में गोली मारकर हत्या, चार घायल

प्रयागराज। धूमनगंज थाना क्षेत्र के नीम सराय में दो गुटों के विवाद में बीच बचाव कर रहे युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हमले में दोनों गुटों से चार लोग घायल हुए हैं। मृतक की पहचान शमशाद उर्फ अल्लू (18) के रूप में हुई है।

धूमनगंज थाना क्षेत्र के नीम सराय में दो गुटों के विवाद में बीच बचाव कर रहे युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हमले में दोनों गुटों से चार लोग घायल हुए हैं। मृतक की पहचान शमशाद उर्फ अल्लू (18) के रूप में हुई है। शमशाद पूर्व सांसद विनोद सोनकर के ड्राइवर का भाई बताया जा रहा है। बृहस्पतिवार देर रात नीम सराय में दो गुटों के बीच मामूली विवाद को लेकर झड़प हो गई थी।

इस दौरान शमशाद के रिश्तेदार की पिटाई कर दी गई। घटना की जानकारी होने पर वह मौके पर पहुंच गया। बीच बचाव करने के दौरान शमशाद को गोली मार दी गई। जिससे वह लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। वहीं हमले में अन्य चार लोग घायल भी हो गए। आसपास के लोगों की मदद से शमशाद को एसआरएन अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले की सूचना पर पहुंची धूमनगंज पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। थाना प्रभारी राजेश उपाध्याय का कहना है कि हमलावरों की तलाश की जा रही है। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

शंकराचार्य को स्नान कराने के लिए फलाहारी महाराज ने सीएम योगी को खून से लिखा पत्र

प्रयागराज। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर केस के मुख्य याचिकाकर्ता दिनेश फलाहारी महाराज ने अपने खून से मुख्यमंत्री योगी जी को पत्र लिख कर कहा है कि शंकराचार्य जी हिंदुओं के भगवान हैं। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर केस के मुख्य याचिकाकर्ता दिनेश फलाहारी महाराज ने अपने खून से मुख्यमंत्री योगी जी को पत्र

लिख कर कहा है कि शंकराचार्य जी हिंदुओं के भगवान हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इनके पैर छूते हैं। आप दोनों सनातनी संतों के जुबानी युद्ध में का फायदा दूसरे राजनैतिक दल उठा रहे हैं। माघ मेला में दिख रहे वीडियो से स्पष्ट हो चुका है कि साधु–संतों का अधिकारियों के द्वारा अपमान हुआ है। अधिकारी मांफी मांग कर इस पूरे प्रकरण को समाप्त कर सकते हैं। आप स्वयं सनातनी महंत हैं। शंकराचार्य को गंगा स्नान से रोकने पर गौ हत्या का पाप लगता है। आप अधिकारियों को माफी मांगने के लिए निर्देश दें। जिससे सोशल मीडिया पर सनातनियों द्वारा दिख रही नाराजगी को दूर कर सके।

जंक्शन के सिविल लाइंस की ओर नो इंट्री व्यवस्था लागू, सूबेदारगंज, छिवकी, नैनी में भी एकल दिशा प्रवेश

प्रयागराज। वसंत पंचमी के एक दिन पहले ही प्रयागराज जंक्शन, सूबेदारगंज, छिवकी और नैनी स्टेशन पर एकल दिशा प्रवेश लागू हो गया। जंक्शन पर यात्रियों को सिविल लाइंस की जगह सिटी साइड से ही प्रवेश दिया गया। वसंत पंचमी के एक दिन पहले ही प्रयागराज जंक्शन, सूबेदारगंज, छिवकी और नैनी स्टेशन पर एकल दिशा प्रवेश लागू हो गया। जंक्शन पर यात्रियों को सिविल लाइंस की जगह सिटी साइड से ही प्रवेश दिया गया।

सिविल लाइंस साइड से प्रवेश नहीं मिलने से यात्रियों को परेशानी हुई। लोगों को लंबा चक्कर काटना पड़ा। अधिकांश यात्रियों का कहना था कि जब भीड़ ही नहीं है तो उन्हें सिविल लाइंस साइड से प्रवेश क्यों नहीं दिया जा रहा है। संगम स्नान के बाद सिविल लाइंस साइड पहुंचे पूर्णचंद्र मीणा ने बताया कि स्टेशन पर भीड़ बिल्कुल भी नहीं है। उन्होंने सुरक्षा कर्मियों से कई बार आग्रह किया लेकिन उन्हें प्रवेश नहीं दिया गया। इसके बाद वह सिटी साइड की ओर रवाना हो गए। इसी तरह सिविल लाइंस साइड में भीड़ न होने की बात अछनेरा के हरीश वाल्मीकि, भरथना के विनय गोस्वामी ने भी कही। प्रयागराज मंडल के पीआरओ अमित कुमार सिंह ने बताया कि प्रयागराज जंक्शन, छिवकी, नैनी, सूबेदारगंज स्टेशन पर रूटवार अलग–अलग रंग निर्धारित किए गए हैं ताकि श्रद्धालु स्टेशन परिसर में प्रवेश करते ही अपने गंतव्य की दिशा को सरलता से पहचान सकें।

अविमुक्तेश्वरानंद पर एफआईआर दर्ज करने की मांग में परिवाद दाखिल

प्रयागराज। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट मथुरा के अध्यक्ष आशुतोष ब्रह्मचारी व अन्य ने बृहस्पतिवार को बीएनएसएस की धारा–173(3) के तहत प्रार्थना पत्र न्यायिक मजिस्ट्रेट पंचम के समक्ष दायर किया है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट मथुरा के अध्यक्ष आशुतोष ब्रह्मचारी व अन्य ने बृहस्पतिवार को बीएनएसएस की धारा–173(3) के तहत प्रार्थना पत्र न्यायिक मजिस्ट्रेट पंचम के समक्ष दायर किया है। उन्होंने शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद व अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। जिला न्यायालय 28 जनवरी को मामले की सुनवाई करेगा। प्रार्थना पत्र में कहा है कि 18 जनवरी को त्रिवेणी मार्ग स्थित शंकराचार्य के शिविर के पास उन पर व उनके साथियों पर हमला किया गया।

कारोबारी के बेटे का अपहरण कर हत्या करने वाला बदमाश मुठभेड़ ढेर, दूसरे की हालत नाजुक

प्रयागराज। चित्रकूट में कारोबारी के 13 वर्षीय बेटे आयुष केसरवानी की हत्या करने वाले बदमाशों की पुलिस से मुठभेड़ हो गई। जिसमें एक बदमाश पुलिस की गोली लगने से ढेर हो गया। दूसरे की हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने उसे एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया है।

चित्रकूट में कारोबारी के 13 वर्षीय बेटे आयुष केसरवानी की हत्या करने वाले बदमाशों की पुलिस से मुठभेड़ हो गई। जिसमें एक बदमाश पुलिस की गोली लगने से ढेर हो गया। दूसरे की हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने उसे एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया है।

प्रयागराज के घूरपुर के रहने वाले दो आरोपी इरफान और कल्लू ने चित्रकूट जिले के बरगढ़ में रहने वाले अशोक केसरवानी के बेटे आयुष केसरवानी (13) का बृहस्पतिवार को अपहरण कर लिया। बदमाशों ने बेटे को वापस करने के बदले 40 लाख रुपये की फिरौती मांगी थी। पैसा न मिलने पर

बदमाशों ने आयुष की हत्या कर दी। घटना के बाद हरकत में आई पुलिस ने दोनों बदमाशों को घेर लिया। पुलिस की गोली से एक बदमाश कल्लू की मौत हो गई, जबकि दूसरा बदमाश इरफान घायल हो गया। उसे एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अपहरण और हत्या से आक्रोशित बरगढ़ बाजार के लोगों ने शुक्रवार को बरगढ़ तिराहे पर चक्काजाम कर दिया। डीएम–एसपी के आश्वासन पर व्यापारियों ने जाम खत्म किया। अशोक केसरवानी का नाम इलाके प्रतिष्ठित व्यापारियों में है। उनका पुत्र आयुष केसरवानी (13) प्रयागराज जनपद के शंकरगढ़ कस्बा स्थित न्यू सेंटर एकेडमी में कक्षा सात का छात्र था। गुरुवार की शाम करीब साढ़े पांच बजे आयुष कोचिंग से घर आया और अपने मकान की छत पर पतंग उड़ा रहा था। इस दौरान घर के बगल में रहने वाले इरफान, जिसकी बक्सा बनाने व बेचने की दुकान है ने अपहरण कर लिया।

40 लाख फिरौती मांगी वहां काम करने वाले इरफान के हेल्पर कल्लू ने आयुष को बाइक सिखाने के बहाने नीचे बुलाया। परिचित होने के कारण आयुष नीचे आया, तो आयुष को बाइक देकर कल्लू उसके पीछे बैठा और वहां से चला गया। रात करीब साढ़े आठ बजे पिता अशोक के मोबाइल पर फोन आया और बताया गया कि आयुष का अपहरण हो गया है और 40 लाख रुपये का इंतजाम कर मऊ–बरगढ़ के बीच घाटी पर पैसा लेकर आना है।

चार्जशीट की देरी पर मुकदमे की कार्यवाही रद्द, हाईकोर्ट ने कहा– कानून की जगह नहीं ले सकता सामान्य प्रचलन

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने चोरी के मामले में दो आरोपियों के खिलाफ पांच साल बाद दायर चार्जसीट पर नाराजगी जताते हुए मुकदमे की पूरी कार्यवाही रद्द कर दी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने चोरी के मामले में दो आरोपियों के खिलाफ पांच साल बाद दायर चार्जसीट पर नाराजगी जताते हुए मुकदमे की पूरी कार्यवाही रद्द कर दी। न्यायिक मजिस्ट्रेट का यह कहना कि अदालतों में सामान्यतरू ऐसा ही होता है पर कोर्ट ने कहा कि कानून की जगह सामान्य प्रचलन नहीं ले सकता। यह आदेश न्यायमूर्ति प्रवीण कुमार गिरी की एकलपीठ ने दिया है।

फिरोजाबाद के नॉर्थ थाने में अप्रैल 2019 में मोटरसाइकिल चोरी की एफआईआर दर्ज की गई थी। इसमें पांच आरोपियों के खिलाफ तो समय पर चार्जशीट दाखिल हो गई थी, लेकिन जांच के दौरान सामने आए दो अन्य आरोपियों सूरज ठाकुर और अवनीश कुमार के खिलाफ चार्जशीट घटना के करीब पांच साल की देरी के बाद 24 नवंबर 2024 को कोर्ट

में पेश किया गया। तत्कालीन मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने आरोप पत्र का तुरंत संज्ञान ले लिया। इसके खिलाफ दोनों आरोपियों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर कर मुकदमे की कार्यवाही रद्द करने की मांग की।

हाईकोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद कहा कि आईपीसी की जिन धाराओं में अधिकतम सजा 3 साल है, उनमें दंड प्रक्रिया संहिता के तहत 3 वर्ष के भीतर ही संज्ञान लिया जाना अनिवार्य है। समय सीमा समाप्त होने के बाद चार्जशीट पर लिया गया संज्ञान पूरी तरह अवैध है। जब मजिस्ट्रेट ने सफाई दी कि आमतौर पर विस्तृत जांच के बिना ही संज्ञान ले लिया जाता है, तो हाईकोर्ट ने सख्त लहजे में कहा कि कोई भी सामान्य प्रचलन स्थापित कानून का स्थान नहीं ले सकता।

हाईकोर्ट ने माना कि पुलिस और अदालत की यह सुस्ती नागरिकों के अनुच्छेद 21 (प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता) के तहत मिलने वाले श्त्वरित न्याय के अधिकारश्श का सीधा उल्लंघन है। इसके साथ ही कोर्ट ने सूरज और अवनीश के खिलाफ संज्ञान आदेश और समस्त कार्यवाही रद्द कर दी। इस मामले में अन्य आरोपियों पर केस जारी रहेगा। वहीं, कोर्ट ने न्यायिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान को निर्देश दिया गया कि वह न्यायिक अधिकारियों को संज्ञान लेने के कानूनी नियमों का उचित प्रशिक्षण दें।

कभी माघ मेले की आर्थिक लहरों से तर होती थी पब्लिक लाइब्रेरी, धर्म–कर्म तक सीमित नहीं रहा स्वरूप

प्रयागराज। माघ मेले का स्वरूप कभी धर्म–कर्म तक ही सीमित नहीं रहा। यह सर्व कल्याण का मेला रहा है। 1895 से 1925 तक माघ मेले के लिए जो बजट जारी होता था, उससे कंपनी गार्डन स्थिति पब्लिक लाइब्रेरी का भी संचालन होता था।

माघ मेले का स्वरूप कभी धर्म–कर्म तक ही सीमित नहीं रहा। यह सर्व कल्याण का मेला रहा है। 1895 से 1925 तक माघ मेले के लिए जो बजट जारी होता था, उससे कंपनी गार्डन स्थिति पब्लिक लाइब्रेरी का भी संचालन होता था। आज भी माघ मेला हजारों लोगों की आर्थिक तरक्की में मददगार है।

मध्यकालीन गॉथिक शैली में निर्मित पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना 1863–64 में गवर्नमेंट प्रेस में हुई थी। 1879 में भवन बनकर तैयार हुआ तो लाइब्रेरी यहां शिफ्ट हो गई थी। शुरुआती दिनों में अंग्रेज अफसरों ने इसमें दिलचस्पी दिखाई, लेकिन बाद के दिनों में इसके संचालन के लिए अलग से फंड मिलना मुश्किल हो गया। डॉ.भुवनेश्वर सिंह गहलौत ने अपनी पुस्तक इलाहाबाद रू वे दिन, वे लोग में इस बात का जिक्र किया है कि अंग्रेजी सरकार ने माघ मेले के फंड का कुछ हिस्सा इस

लाइब्रेरी के संचालन पर खर्च किया।

हालांकि, चार मार्च 1923 को इस लाइब्रेरी को शासन संरक्षित संस्था घोषित कर दिया गया। इसके प्रबंधन में बदलाव कर 26 लोगों की कमेटी बनाई गई, लेकिन माघ मेले के कोष का पैसा इस पर खर्च किया जाता रहा। इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने इसे देश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तकालय बताया। तेज बहादुर सप्रू, डॉ.अमरनाथ झा, सर सैयद वजीर हसन, न्यायमूर्ति ओएस मूथम, प्रो.सतीश चंद्र देव, ओपी भटनागर, एससी देसाई और न्यायमूर्ति कमलाकांत वर्मा जैसे प्रतिष्ठित लोग प्रबंध समिति के सदस्य रहे।

पूर्व पीएम शास्त्री ने इसे सरस्वती नदी कहा

वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ.गोपाल मोहन शुक्ल बताते हैं कि लाइब्रेरी की स्थापना के 100 वर्ष पूरा होने पर समारोह हुआ तो उसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री आए थे। शास्त्री जी ने अपने भाषण में कहा था कि वह विदेश जाते हैं और संगम की बात होती है तो लोग पूछते हैं कि सरस्वती नदी तो दिखती नहीं। तब उन्होंने कहा कि यह लाइब्रेरी ही सरस्वती का स्वरूप है। शास्त्री जी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी को दूसरी त्रिवेणी कहा था।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद का धरना छठे दिन रहा जारी, तबीयत बिगड़ी

प्रयागराज। 18 जनवरी, मौनी अमावस्या से ही माघ मेले में धरने पर बैठे ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती की तबीयत शुक्रवार को बिगड़ गई। उनको बुखार हो गया है। खुले आसमान के नीचे छह दिन से बैठने के कारण उनकी सेहत बिगड़ गई है। शंकराचार्य के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी शैलेंद्र योगीराज ने तबीयत खराब होने की पुष्टि की है। 18 जनवरी, मौनी अमावस्या से ही माघ मेले में धरने पर बैठे ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती की तबीयत शुक्रवार को बिगड़ गई। उनको बुखार हो गया है। खुले आसमान के नीचे छह दिन से बैठने के कारण उनके स्वास्थ्य में खराबी आई है। चिकित्सकों से परामर्श लिया गया है। फिलहाल वह आराम कर रहे हैं और लोगों से मुलाकात करने से बच रहे हैं। शंकराचार्य के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी शैलेंद्र योगीराज ने तबीयत खराब होने की पुष्टि की है। मौनी अमावस्या पर मेला प्रशासन ने उनकी पालकी रोक दी थी और उन्हें वापस लौटा दिया था। शंकराचार्य के शिष्य और संतों का आरोप है कि चोटी और शिखा पकड़कर उनको पटक कर मारा गया। दंड छीनकर फेंक दिए गए। पिटाई के कारण कई साधु–संन्यासियों की हालत खराब हो गई। घटना से नाराज शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने धरना शुरू कर दिया है। उनको पुलिस ने पालकी समेत उनके त्रिवेणी मार्ग स्थित शिविर के सामने छोड़ दिया था। तब से वह उसी अवस्था में अपनी पालकी पर ही बैठे हैं और अपनी जिद पर अड़े हैं।

'एक्टिव कूलिंग जैकेट' से 50–70 डिग्री की तपिश में भी होगा ठंडक का एहसास

प्रयागराज। ट्रिपलआईटी इलाहाबाद के सेंटर फॉर इंटेलिजेंट रोबोट्स के छात्रों ने भीषड़ गर्मी में काम करने वाले श्रमिकों के लिए एक ऐसी तकनीक विकसित की है, जो 50–70 डिग्री सेल्सियस के तापमान में भी शरीर को ठंडक देने में सक्षम है।

ट्रिपलआईटी इलाहाबाद के सेंटर फॉर इंटेलिजेंट रोबोट्स के छात्रों ने भीषड़ गर्मी में काम करने वाले श्रमिकों के लिए एक ऐसी तकनीक विकसित की है, जो 50–70 डिग्री सेल्सियस के तापमान में भी शरीर को ठंडक देने में सक्षम है। यह एक्टिव कूलिंग जैकेट विदेशी पैसिव जेल कूलिंग उत्पादों से बिल्कुल अलग है क्योंकि इसमें बार–बार रिफिल की जरूरत नहीं पड़ती और यह सेंसर के माध्यम से रीयल–टाइम तापमान नियंत्रण की सुविधा देता है। डिस्पोजेबल जेल पैक जहां कचरा बढ़ाते हैं, वहीं यह जैकेट रीयूजेबल है। यही वजह है कि इसे पर्यावरण के अनुकूल माना जा रहा है। यह जैकेट खासतौर पर सैन्य टैंक ऑपरेटरों, खनन कर्मियों, फैक्ट्री वर्कर्स, निर्माण श्रमिकों, डिलीवरी स्टाफ और रिक्शा चालकों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है। अत्यधिक

गर्मी में होने वाली थकान, हीट स्ट्रोक और कार्यक्षमता में गिरावट को यह तकनीक काफी हद तक कम कर सकती है।

इस परियोजना को स्मित शेंडे, रोहित कुमार, उजैर आलम और कविन प्रकाश की टीम ने डॉ. सूर्य प्रकाश और प्रो. जीसी नंदी के मार्गदर्शन में विकसित किया गया है। टीम ने बिजली खपत, ताप प्रबंधन और पोर्टेबिलिटी जैसी चुनौतियों को पार करते हुए टिकाऊ और किफायती मॉडल तैयार किया है। जैकेट में पेल्टियर प्लेट्स आधारित थर्मोइलेक्ट्रिक कूलिंग सिस्टम लगाया गया है। ठंडी सतह शरीर की ओर और गर्म सतह बाहर की ओर रखी गई है, जिससे अधिकतम कूलिंग दक्षता हासिल होती है। जैकेट पूरी तरह पोर्टेबल है और इसे रीचार्जेबल लीथियम–ऑयन बैटरी या एसी एडॉप्टर दोनों से चलाया जा सकता है। खास बात यह है कि इसमें स्वदेशी रूप से निर्मित कस्टम पीसीबी और माइक्रो–कंट्रोलर आधारित कंट्रोल सिस्टम लगाया गया है, जो जरूरत के अनुसार ठंडक को घटा–बढ़ा सकता है। जैकेट का संचालन एसटीएम 32 ब्लू पिल माइक्रो–कंट्रोलर पर आधारित क्लोज्ड–लूप सिस्टम से होता है। तापमान सेंसर लगातार वातावरण और शरीर के तापमान पर नजर रखता है। मिली जानकारी को पीआईडी कंट्रोल एल्गोरिद्म प्रोसेस करता है और फिर बीटीएस 7960 मोटर ड्राइवर के जरिए पेल्टियर प्लेट्स व पंखे को आवश्यक करंट सप्लाई की जाती है। इससे न सिर्फ ठंडक मिलती है, बल्कि गर्म सतह से निकलने वाली गर्मी भी पंखे और हीट सिंक के जरिए प्रभावी ढंग से बाहर निकल जाती है।

गलत खून चढ़ाने का मामला– एसआरएन अस्पताल पर हाईकोर्ट सख्त, रिकॉर्ड तलब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्वरूपरानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल में अधिवक्ता की मां को कथित रूप से गलत ब्लड ग्रुप का खून चढ़ाए जाने के मामले में कड़ा रुख अपनाया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्वरूपरानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल में अधिवक्ता की मां को कथित रूप से गलत ब्लड ग्रुप का खून चढ़ाए जाने के मामले में कड़ा रुख अपनाया है। कोर्ट ने निर्देश दिया है कि एसआरएन अस्पताल के प्रिंसिपल वीके पांडेय की ओर से हस्ताक्षरित सभी रिकॉर्ड के मूल दस्तावेज अगली सुनवाई 28 जनवरी को न्यायालय में प्रस्तुत किए जाएं। साथ ही राज्य सरकार की ओर से दाखिल किए गए सभी कागजात सीलबंद लिफाफे में कोर्ट की कस्टडी में रखे जाएंगे। यह आदेश न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ आनंद की खंडपीठ ने दिया है। अधिवक्ता सौरभ सिंह सोमवंशी ने याचिका दाखिल कर आरोप लगाया है कि सर्जरी के दौरान उनकी मां को गलत ब्लड ग्रुप का खून चढ़ाया गया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। उनका कहना है कि यह घटना अस्पताल के डॉक्टरों और स्टाफ की गंभीर लापरवाही का परिणाम है।

अस्पताल प्रशासन की ओर से दाखिल 43 पन्नों के जवाब में कहा गया कि चार दिसंबर को उस नाम की किसी महिला को ब्लड नहीं दिया गया। इस पर याची पक्ष की ओर से सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता रीना एन सिंह और राणा सिंह ने दस्तावेज पेश किया, जिसके तहत चार दिसंबर को दोपहर तीन बजे याची की मां को ब्लड जारी किया गया था। एक घंटे चली बहस के बाद कोर्ट ने इलाज से संबंधित सभी दस्तावेज याची को उपलब्ध कराने का भी निर्देश दिया।

अधिवक्ता की हिस्ट्रीशीट मामले में एडीजी एसटीएफ व पुलिस अधिकारियों को नोटिस

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अधिवक्ता अमित कुमार सिंह सोनू (याची) की बी ग्रेड हिस्ट्रीशीट खोले जाने के मामले में एडीजी स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) व अन्य को नोटिस जारी किया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अधिवक्ता अमित कुमार सिंह सोनू (याची) की बी ग्रेड हिस्ट्रीशीट खोले जाने के मामले में एडीजी स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) व अन्य को नोटिस जारी किया है। साथ ही राज्य सरकार सहित सभी से चार हफ्ते में जवाब मांगा है। अगली सुनवाई 10 मार्च को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति राजीव मिश्रा और न्यायमूर्ति लक्ष्मीकांत शुक्ला की खंडपीठ ने दिया है। याची अमित कुमार सिंह हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष हैं। उनका आरोप है कि गलत तथ्यों और फर्जी केस के आधार पर उनकी बी ग्रेड हिस्ट्रीशीट खोली गई है। इसके खिलाफ उन्होंने याचिका दायर की है।

माघ मेले में एक साल की मासूम की वाहन से कुचलकर मौत, जांच में जुटी पुलिस

प्रयागराज। माघ मेला क्षेत्र के हनुमान मंदिर के पास बृहस्पतिवार सुबह अज्ञात वाहन ने एक साल की मासूम रीना को कुचल दिया जिससे उसकी मौत हो गई। घटना उस दौरान हुई जब बच्ची अपनी दुकान के पास खेल रही थी। माघ मेला क्षेत्र के हनुमान मंदिर के पास बृहस्पतिवार सुबह अज्ञात वाहन ने एक साल की मासूम रीना को कुचल दिया जिससे उसकी मौत हो गई। घटना उस दौरान हुई जब बच्ची अपनी दुकान के पास खेल रही थी। हालांकि, परिजनों ने पुलिस से शिकायत नहीं की है। मूलरूप से वाराणसी जिले के थाना फूलपुर गांव बिगरईच निवासी रामानंद ने माघ मेला क्षेत्र में पूजा–पाठ सामग्री समेत अन्य सामान की दुकान लगाई है।

पत्र सूचना कार्यालय, लखनऊ द्वारा प्रयागराज के मेजा तहसील में 'विकसित भारत – जी राम जी कानून' विषय पर ग्रामीण मीडिया कार्यशाला– वार्तालाप का किया गया आयोजन

प्रयागराज। पत्र सूचना कार्यालय द्वारा बृहस्पतिवार को प्रयागराज जिले के मेजा तहसील के पंडित कृपाशंकर तिवारी महाविद्यालय में श्वार्तालाप कार्यक्रमश (ग्रामीण मीडिया कार्यशाला) का आयोजन किया गया। श्कार्यशालाश में हाल में भारतीय संसद द्वारा बनाये गये श्विकसित – भारत जी राम जी कानूनश तथा केंद्र सरकार द्वारा जन कल्याण हेतु बनायी गयी नीतियों, जनकल्याणकारी कार्यक्रमों एवं सन 2047 तक देश को विकसित बनाने के संकल्पों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय पत्रकारों द्वारा भागीदारी की गयी ।

कार्यक्रम के शुरुआत में राष्ट्रगीत श्वंदे मातरमश के 150 पूर्ण होने के क्रम में उपस्थित लोगों द्वारा सामूहिक रूप से राष्ट्रगीत का गायन किया गया।

कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर गिरीश चंद्र त्त्रिपाठी, अतिथि एवं वक्ता के रूप में पूर्व उप शिक्षा निदेशक एवं समाजसेवी श्री अशोक नाथ तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार एवं अध्यक्ष बाल कल्याण समिति डॉ. अखिलेश मिश्रा, बैंक ऑफ़ बड़ौदा के उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अनूप शुक्ल तथा पत्र सूचना कार्यालय एवं केंद्रीय संचार ब्यूरो, उत्तर प्रदेश के निदेशक श्री दिलीप कुमार शुक्ल द्वारा संबोधित किया गया।

श्मीडिया कार्यशालाश को संबोधित करते हुये काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर गिरीश चंद्र त्रिपाठी ने कहा कि श्विकसित भारत दृ जी राम जी कानूनश सेवा, सुशासन और समृद्धि की भावना पर आधारित एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने कहा कि यह कानून प्रत्येक पात्र ग्रामीण परिवार को वर्ष में 125 दिनों के रोजगार की गारंटी प्रदान करता है, जो श्मनरेगाश के तहत दिये जाने वाली 100 दिनों के रोजगार की गारंटी से आगे का कदम है।

अतिथि एवं वक्त के रूप में कार्यक्रम को संबोधित करते हुये सेवानिवृत्त उप शिक्षा निदेशक एवं समाजसेवी श्री अशोक नाथ तिवारी ने कहा कि श्विकसित भारत –जी राम जी कानूनश सरकार की सेवा, सुशासन और समृद्धि की भावना पर आधारित है, जो देश को विकास के मार्ग पर आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होगा।

वार्तालप कार्य्रकम के दौरान बाल कल्याण समिति के प्रयागराज के अध्यक्ष डां. अखिलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि विकसित भारत केवल एक नारा नहीं, बल्कि देश के समग्र विकास का संकल्प है, जिसकी आधारशिला ग्रामीण विकास पर टिकी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वर्ष 2047 तक भारत को रूविकसित राष्ट्रश बनाने की परिकल्पना प्रस्तुत की गयी है, जिसमें गांवों की निर्णायक भूमिका होगी।

उन्होंने बताया कि मजदूरी का भुगतान 7 से 15 दिनों के भीतर करना अनिवार्य किया गया है, ताकि श्रमिकों को समय पर लाभ मिल सके। योजना की क्रियान्वयन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिये डिजिटल भुगतान प्रणाली, बायोमेट्रिक सत्यापन, जियो–टैगिंग और रियल–टाइम मॉनिटरिंग की व्यवस्था की गई है। श्री मिश्रा ने कहा कि योजना में श्सोशल ऑडिटश को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जिसमें गांव के निवासी स्वयं निगरानी करेंगे।

कार्यक्रम को अतिथि एवं वक्ता के रूप में बैंक ऑफ़ बड़ौदा के उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अनूप शुक्ल द्वारा संबोधित किया गया। उन्होंने बताया कि सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में बैंक किस प्रकार से अपनी भूमिका निभाता है आम आदमी बैंक के माध्यम से किस प्रकार से लाभ प्राप्त कर अपनी आजीविका को चला सकता है।

निदेशक श्री शुक्ल ने कहा कि केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा प्रयागराज की मेजा तहसील में पंडित कृपाशंकर तिवारी महाविद्यालय में दिनांक – 24 जनवरी से 28 जनवरी 2026 के बीच इंटीग्रेटेड कम्युनिकेशन एंड आउटरीच प्रोग्राम के तहत श्विकसित भारत – जी राम जी कानूनश, श्सेवा, सुशासन एवं समृद्धिश विषय पर पांच दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें श्विकसित भारत – जी राम जी कानूनरू के प्रावधानों, केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों की उपलब्धियों एवं प्रयासों तथा गणतंत्र दिवस से संबंधित विषय वस्तु को प्रदर्शित किया जायेगा।

13 दिन से लापता युवक की मौत, बहते नाले में मिला शव

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के नीलमथा क्षेत्र से लापता युवक का शव नाले में मिला। मृतक 13 दिन से लापता था। परिजनों ने कैंट थाने में गुमशुदगी दर्ज करवाई थी। बीती रात स्थानीय लोगों ने नाले में एक शव पड़ा होने की सूचना दी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने मृतक की पहचान की। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। नीलमथा निवासी अमित कुमार ने बताया कि 10 जनवरी की सुबह छोटा भाई आशीष काम पर जाने की बात कहकर घर से निकला था। वह पेंटिंग का काम करता था। रात में अकसर 8 से 9 बजे के बीच में घर आ जाता था। 10 जनवरी को वह रात 12 बजे तक नहीं आया। आसपास के लोगों से बात करने पर कुछ जानकारी नहीं मिली। सुबह उठते ही परिवार के सभी सदस्यों ने उसे ढूंढना शुरू कर दिया। काफी ढूंढने के बाद जब वह नहीं मिला तो 13 जनवरी को कैंट थाने में मुकदमा दर्ज करवाया था। आशीष की पहचान के लिए परिजनों ने इलाके में पर्चे भी चिपकाए थे। इस दौरान विजय नगर इलाके के मालाग नाले में एक शव मिलने की सूचना परिजनों को मिली। मौके पर परिजनों के साथ पुलिस भी पहुंच गई। शव की शिनाख्त कराई गई। जिसमें उसकी पहचान आशीष कुमार के रूप में हुई। मृतक के परिवार में पत्नी अंजली कुमार, बेटी अर्पिता, बेटा अर्पित है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

शरारती तत्वों ने दुकान में लगाई आग,सारा सामान जलकर राख

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ के चिनहट थाना क्षेत्र स्थित सतरिख रोड पर शुक्रवार देर रात एक सब्जी की दुकान में आग लगने से हड़कंप मच गया। शेखर होटल के पास सड़क किनारे स्थित दुकान पूरी तरह जलकर राख हो गई। दुकान संचालक बाबूलाल सड़क किनारे टट्टर शेड लगाकर वर्षों से सब्जी बेचते थे। शुक्रवार रात करीब एक बजे कुछ अज्ञात शरारती तत्वों ने उनकी दुकान में आग लगा दी। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और दुकान में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि पास से गुजर रही बिजली की लाइन भी चपेट में आ गई, जिससे आसपास के इलाके की बिजली सप्लाई ठप हो गई। आग लगने की सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों ने पुलिस और फायर ब्रिगेड को जानकारी दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड टीम ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। तब तक दुकान पूरी तरह जल चुकी थी। चिनहट पुलिस के अनुसार, घटना स्थल के सामने स्थित दुकानों में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। पुलिस फुटेज खंगाल रही है, ताकि आगजनी करने वालों की पहचान की जा सके। प्रारंभिक जांच में आग लगने का कारण संदिग्ध माना जा रहा है। पुलिस का कहना है कि दोषियों की पहचान कर जल्द ही कार्रवाई की जाएगी।

नेताजी का राष्ट्र के प्रति समर्पण युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत : केशव

लखनऊ, संवाददाता। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने देश के महान स्वतंत्रता सेनानी, अदम्य साहस और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर नमन किया। श्री मौर्य ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस का संपूर्ण जीवन देश की स्वतंत्रता, स्वाभिमान और आत्मबल के लिए समर्पित रहा। उन्होंने अपने ओजस्वी विचारों, अद्वितीय नेतृत्व क्षमता और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" जैसे प्रेरक उद्घोष से देशवासियों में स्वतंत्रता की अलख जगाई। आजाद हिंद फौज के माध्यम से उन्होंने भारत की आजादी के संघर्ष को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान की। नेताजी का राष्ट्र के प्रति समर्पण, अनुशासन और त्याग आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है और दृढ़ संकल्प के साथ किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। श्री मौर्य ने प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि वे नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आदर्शों को आत्मसात करते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं और एक सशक्त, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दें।

यूपी में कौशल क्रांति को मिलेगी नई रफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार प्रदेश के युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए निरंतर ठोस कदम उठा रही है।

नवयुग कन्या महाविद्यालय में बसंतोत्सव

लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय राजेन्द्र नगर लखनऊ में बसंत पंचमी एवंध नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जन्म जयंती समारोह महाविद्यालय के अहिल्याबाई होलकर सांस्कृतिक क्लब द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो मंजुला उपाध्याय एवं सभी प्रवक्ताओं द्वारा मां सरस्वती का सामूहिक पूजन एवं हवन किया गया। पंडित शैलेन्द्र द्वारा विधिवत पूजन,अर्चन करवाया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की गयी । बसंत गीत सखि वसंत आया की प्रस्तुति महाविद्यालय की प्रो संगीता शुक्ला,डा अपूर्वा अवस्थी एवं ललिता पांडे द्वारा दी गई।

बसंत पर छात्रा दर्शना उपाध्याय ने भोजपुरी गीत प्रस्तुत किया ।प्राची तिवारी ने काव्यपाठ करते हुए सरस्वती जी के नामों का स्मरण किया।. उड़ि जाए रे बसंती चुनर सर से उड़ि जाए रे बसंत गीत पर सभी के द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर उनके चित्र को महाविद्यालय की प्राचार्या द्वारा माल्यार्पण किया गया। आस्था त्रिपाठी ने सुभाष चन्द्र बोस पर कविता सुनाई एवं प्रियंका भारती ने सुभाष चन्द्र बोस के जीवन और बलिदान पर विचार व्यक्त किए।

सभी छात्राएं पीले परिधान में सुसज्जित रहीं। पूजन के बाद प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन आकृति श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक समिति के सभी सदस्य प्रो सीमा सरकार,प्रो सीमा पांडे,डा अवनिका,डा अपूर्वा अवस्थी ,डा चनप्रीत कौर,डा अंकिता पांडे,डा क्षितिज शुक्ला,डा स्नेहा चौधरी,डा सुकन्या तिवारी उपस्थित रहीं।

अयोध्या कला संस्कृति महाकुंभ में मदद फाउंडेशन को मिलेगा 'स्वदेश सेवा रत्न सम्मान'

अयोध्या। जब निस्वार्थ सेवा की गूंज राष्ट्रीय मंच तक पहुंचने लगे, तो यह केवल सम्मान नहीं, बल्कि पूरे सेवा परिवार के लिए गर्व का क्षण होता है। एवं उनकी धर्मपत्नी अमृता तिवारी को 24 जनवरी (शनिवार) को प्रदान किया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन स्वदेश संस्थान भारत, जिला प्रशासन निकट नवीन मंडी बाईपास, अयोध्या में संपन्न होगा। इस भव्य आयोजन में देशभर के कुल 30 ऐसे समाजसेवियों को सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने किया है, जो जमीनी स्तर पर उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष एस बी सागर प्रजापति ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि,

प्रयागराज की चर्चित सामाजिक संस्था मदद फाउंडेशन को उसके निरंतर सेवा कार्यों के लिए अयोध्या में आयोजित अयोध्या कला संस्कृति महाकुंभ में प्रतिष्ठित 'स्वदेश सेवा रत्न सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान संस्था के संस्थापक मंगला प्रसाद तिवारी अयोध्या एवं टीम अपना स्कूल अयोध्या के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। सम्मान प्रभारी रंजीत यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि अयोध्या कला संस्कृति महाकुंभ का आयोजन 23 जनवरी से 27 जनवरी तक किया जा रहा है। यह महोत्सव माधुरी पैलेस, अपने हिस्से की खुशियां भी समाज के नाम कर दीं और अपने लिए कम, दूसरों के लिए अधिक जिया। उन्होंने बताया कि चयन प्रक्रिया के तहत हमारी टीम ने पिछले एक महीने से देशभर में सर्वे कर ऐसे 30 क्रांतिकारी समाजसेवी, समाज सुधारक और कलाकारों का चयन

यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि देशभर से ऐसे कोहिनूरों को सम्मानित करने का अवसर हमें मिल रहा है।

गौरतलब है कि मदद फाउंडेशन वर्षों से समाज के सबसे उपेक्षित वर्ग के लिए सेवा कार्य कर रहा है। संस्था फुटपाथ पर जीवन यापन करने वाले जरूरतमंदों के लिए रविवार की रसोई, निःशुल्क भोजन, शुद्ध पेयजल, दवाइयां और स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराती है। इतना ही नहीं, मदद फाउंडेशन उन निराश्रित लोगों की मौत के बाद भी मानवीय जिम्मेदारी निभाता है जिनका इस दुनिया में कोई नहीं होता। संस्था ऐसे बेसहारा व्यक्तियों के दाह संस्कार से लेकर क्रिया–कर्म और 13वीं तक की पूरी व्यवस्था स्वयं करती है, ताकि अंतिम संस्कार भी सम्मान और गरिमा के साथ हो सके।

यह सम्मान न केवल मदद फाउंडेशन के संस्थापक दंपती, बल्कि पूरी टीम के लिए मनोबल बढ़ाने वाला और उनके सेवा कार्यों को राष्ट्रीय पहचान दिलाने वाला साबित होगा।

वन में खिले पलाश

(छप्पय)

बहने लगी बहार, मधुर रस अंतस घोले।
छाया नवल उजास, प्रकृति की काया बोले।
सजा सुनहरा रंग, तितलियाँ चंचल दिखतीं।
वन में खिले पलाश, भोर में चिड़िया चहकीं।
सजधज कर भौरे सभी, गीत मिलन का गा रहे।
रे वसन्त! उनको बुला, दिल को जो अति भा रहे।।

खिलने लगे पलाश खेत में सरसों फूली।
अरहर के ही साथ तिलहने जमकर झूलीं।
आमों में छा बौर सुगन्धित करते जग को।
अलि भी हैं मदहोश बताते उपवन सबको।
मौसम के अनुरूप ही कलियों ने उसको लिखा।
फूलों ने हँसकर कहा पंखुरियों में जो दिखा।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

शहर समता विचार मंच द्वारा ऑनलाइन काव्य गोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न

प्रयागराज। शहर समता विचार के तत्वावधान में आयोजित गूगल मीट द्वारा बसंत पंचमी एवं गणतंत्र दिवस पर आयोजित काव्य गोष्ठी। रचना सक्सेना की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। उस आयोजन के मुख्य अतिथि उमेश श्रीवास्तव रहे। काव्यगोष्ठी का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती

वंदना की सुंदर प्रस्तुति छाया सक्सेना द्वारा की गई। काव्य गोष्ठी का संयोजन एवं संचालन उमा मिश्रा प्रीति ने किया।

इस काव्य गोष्ठी में श्रद्धा श्रीवास्तव अनीता दुबे, पुष्पा सिंह सरिता कपूर, डॉ शशि जायसवाल, डॉ कुमकुम शुक्ला, संतोष मिश्रा, रेणुका पटेल, मंजू लता नागेश, मनोरमा श्रीवास्तव, सुनीता मिश्रा पूनम पांडे अनुराधा गर्ग दीप्ति। रचनाकार बहनों ने सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चांद लगा दियें। धन्यवाद ज्ञापन उमा मिश्रा प्रीति ने किया।

नवयुग कन्या महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा श्रद्धा और सम्मान से मनाई गई सुभाष चंद्र बोस जयंती

लखनऊ। आज राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ के प्रांगण में महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय ने की। इस अवसर पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्राचार्या प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय ने अपने संबोधन में कहा कि नेताजी का जीवन साहस, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। उनके विचार आज भी युवाओं को देशसेवा के लिए

प्रेरित करते हैं। इस कार्यक्रम में स्वयंसेविकाओं ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन पर स्लोगन तथा पोस्टर भी बनाए। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में रसायन शास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉक्टर सुनीता सिंह व प्रवक्ता डॉक्टर नेहा अग्रवाल शामिल रहीं। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है –

स्लोगन प्रतियोगिता
प्रथम – विशाखा राज (बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष)
द्वितीय– शिवानी शर्मा (बी. एस. सी. तृतीय वर्ष)
तृतीय –रमशा (बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष)
सांत्वना पुरस्कार– मुस्कान कश्यप (बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष), आस्था गौतम (बी. एस. सी. तृतीय वर्ष), छवि सोनकर (बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष)

इसी क्रम में पोस्टर प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा–
प्रथम – महिमा सिंह ((बी. एस. सी. तृतीय वर्ष)
द्वितीय –जानवी सिंह (बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष)
तृतीय–सौम्या मौर्या (बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष)

प्राचार्या ने सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा की और इसी प्रकार आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. श्वेता उपाध्याय, डॉ मनीषा बड़ौनियाँ, डॉ. चंदन मौर्या एवं सुश्री दीक्षा तथा सभी स्वयंसेविकायें उपस्थिति रहीं। कार्यक्रम का समापन वंदे मातरम के साथ हुआ।

सम्पादकीय.......

दोस्ती की लिखावट

निस्संदेह डिजिटल दौर के नशे में डूबी पीढ़ी वास्तविक रिश्तों से दूर होती जा रही है। वहीं दूसरी ओर छात्रों की लिखने की आदत भी छूटती जा रही है। लेखन हमारी मौलिक व सार्थक अभिव्यक्ति है और सेहत से भी जुड़ा है। पुरानी कहावत हैकृजिसके बहुत सारे दोस्त होते हैं उसका कोई दोस्त नहीं होता। कमोबेश मौजूदा दौर में हकीकत यही है कि जिनके सोशल मीडिया में हजारों–लाखों मित्र व फॉलोवर होते हैं वे निजी जीवन में नितांत एकाकी होते हैं। यह घातक प्रवृत्ति बच्चों में भी तेजी से घर कर रही है। लेखन में हमारी उंगलियों के पोर इस्तेमाल होते हैं, जिनके सिरे हमारे विभिन्न अंगों के स्वास्थ्य से गहरे तक जुड़े रहते हैं। कलम या पेन से लेखन हमारे बौद्धिक विकास में भी सहायक होता है। लेकिन आज मोबाइल व कंप्यूटर, लेपटॉप व टैबलेट के दौर में बच्चे लेखन से दूर होकर खुद को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाते। इस संकट को महसूस करते हुए सीबीएसई ने छात्रों को मित्रों से जुड़ाव व उनकी लेखन कला को निखारने के लिए अभिनव पहल की है। बोर्ड ने डाक विभाग के साथ मिलकर यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन 'इंटरनेशनल लेटर राइटिंग कंपीटिशन–2026' आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम आने वाले छात्र को पचास हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। साथ ही विजेता को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका भी दिया जाएगा। छात्रों को जो पत्र लिखने का विषय दिया गया है वह मौजूदा हालात में बेहद रोचक व उपयोगी है। छात्र को अपने दोस्त को पत्र लिखना है कि मौजूदा डिजिटल दौर में लोगों का आपसी जुड़ाव व बातचीत क्यों जरूरी है। दरअसल, इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों की सोच को विस्तार देना और उनकी लेखन कला को निखारना है। वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता को जीतने वाले प्रतिभागी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल जीतने पर छात्र को स्विट्जरलैंड के बर्न स्थित यूपीए हेड क्वार्टर का दौरा करने का अवसर मिल सकता है। इस प्रतियोगिता के प्रतिभागी नौ से पंद्रह साल के ही होने चाहिए। वे अपनी एंट्री अंग्रेजी व हिंदी में भी दे सकते हैं। प्रतिभागी अपने स्कूल के माध्यम से ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। निश्चित रूप से बच्चों में लिखने की घटती प्रवृत्ति के दौर में यह एक रचनात्मक प्रयास है। दरअसल, लगातार सोशल मीडिया स्क्रॉल करते बच्चे न केवल रचनात्मक लेखन से वंचित हो रहे हैं, बल्कि अपने दोस्तों से भी कटते जा रहे हैं, जिसका असर उनकी याददाश्त व सृजन क्षमता पर भी पड़ रहा है। एक समय था बच्चे डायरी लेखन व स्कूलों में कविता व लेख लिखने को खासे उत्सुक होते थे। दोस्तों के साथ खेल के मैदान और घर पर खेलना उन्हें शारीरिक व मानसिक स्तर पर स्वस्थ रखता था। लेकिन आज बच्चे ऑनलाइन खेलों में इतने मस्त हो जाते हैं कि उन्हें अपने असली दोस्तों का ख्याल ही नहीं रहता। वे जीवन की वास्तविक चुनौतियों से दूर होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं, आज शारीरिक सक्रियता के अभाव के कारण बच्चे छोटी उम्र में ही वयस्कों जैसे रोगों के शिकार होते जा रहे हैं। ये रोग शारीरिक भी हैं और मानसिक भी हैं। छात्र अपना बचपन स्वाभाविक रूप से नहीं जी पा रहे हैं। सही मायनों में वे समय से पहले वयस्क होते जा रहे हैं। एक समय बच्चों की लेखन क्षमता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। परीक्षा में बाकायदा सुंदर लेखन के अतिरिक्त अंक दिए जाते हैं। लेकिन आज बच्चे इंटरनेट पर उपलब्ध शॉर्टकट के जरिये हर परीक्षा पास करना चाहते हैं। कट–पेस्ट संस्कृति ने उनकी मौलिक सोच व सृजनात्मकता को ग्रहण लगा दिया। अक्सर छात्र प्रतियोगात्मक परीक्षाओं व लेखन प्रतिस्पर्धाओं में ऑनलाइन माध्यमों व इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री को हेर–फेर के साथ प्रस्तुत करते देखे जा रहे हैं, जो उन्हें व्यावहारिक जीवन की प्रतिस्पर्धा में कमजोर बनाता है। ऐसे में सीबीएसई व पोस्टल विभाग की पहल अनुकरणीय व प्रशंसनीय है।

ईरान में नरसंहार और वैश्विक दोहरे मापदंडों की सड़ांध

बलबीर पुंज

ईरान में हालिया नरसंहार किसी आकस्मिक राजनीतिक उथल–पुथल का नतीजा नहीं है। यह एक सुनियोजित, वैचारिक और मजहब आधारित सतत हिंसा का विस्तार है, जो कभी समाप्त नहीं होती। इस त्रासदी में अधिक भयावह वह वैश्विक चुप्पी है, जिसे अक्सर मानवाधिकार, लोकतंत्र और अंतरात्मा की दुहाई देने वाला कुटिल वर्ग जानबूझकर साधे रहता है। इस मामले में अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की प्रतिक्रिया भी उसी वैश्विक पाखंड का हिस्सा है। दुनिया के सबसे ताकतवर पद पर बैठा व्यक्ति यदि हर अंतर्राष्ट्रीय संकट को सौदेबाजी और तात्कालिक लाभ के चश्मे से देखे, तो उससे नैतिकता की अपेक्षा करना स्वयं को धोखा देना है। ईरान में गिरती लाशों पर ट्रम्प के वक्तव्य न तो संवेदनशील हैं, न ही उनमें लोकतंत्र बहाली का कोई संकल्प दिखता है–यदि कुछ है, तो वह केवल स्वार्थ है। निहत्थे ईरानी जिस साहस के साथ इस्लामी तानाशाही के विरुद्ध खड़े रहे, वह आधुनिक इतिहास का एक करुण और गौरवपूर्ण अध्याय है। 17 जनवरी को स्वयं सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई द्वारा यह स्वीकार करना कि इस्लामी शासन–विरोधी प्रदर्शनों में 'कई हजार लोग' मारे जा चुके हैं, वह मजहबी रक्तपात की भयावहता का एक और प्रतिरूप है। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि जब मुसलमानों की हत्या किसी इस्लामी शासन के हाथों होती है, तब एक विशेष संगठित आक्रोश कहां गायब हो जाता है? गाजा में इसराईली सेना द्वारा मुसलमानों की मौतों और कश्मीर में मोदी सरकार के आतंकवाद–अलगाववाद विरोधी अभियानों पर आसमान सिर पर उठा लेने वाला स्वयंभू बुद्धिजीवी कुनबा ईरान में मुसलमानों के नरसंहार पर मौन क्यों है? दरअसल, यह वही दोहरा मापदंड है, जिसने आज के नैतिक विमर्श को सड़ांध से भर दिया है। इस्लाम के नाम पर गैर–मुसलमानों से घृणा, उनके पूजास्थलों का विखंडन और हिंसा (हत्या सहित) सदियों से जारी मजहबी उपक्रम है, जिसे वर्षों से तथाकथित उदारवादियों द्वारा भ्रामक रूपी 'प्रतिक्रिया' की आढ़ में जायज ठहराने का प्रयास किया जा रहा है। इसी में मुसलमानों के दमन और यहां तक कि उनके कत्ल पर इसी समूह द्वारा चुप्पी तब साध ली जाती है, जब हत्यारा हम–मजहबी या विशुद्ध इस्लामी शासनतंत्र हो। तब ऐसा व्यवहार किया जाता है, मानो मानवता को कोई चोट ही न पहुंची हो, मानो रक्त केवल रंग हो और करुणा सिर्फ वैचारिक विकल्प। इससे अधिक नैतिक पतन और बौद्धिक दरिद्रता और क्या हो सकती है? भारत में वामपंथियों, तथाकथित उदारवादियों और महिला अधिकार समूहों की भूमिका भी संदेह के घेरे में है। जो वर्ग छोटी–छोटी घटना (गाजा सहित) पर अक्सर सड़कों पर उतर आता है, वह ईरान में महिलाओं के दमन में असामान्य रूप से चुप है। यही नहीं, श्रीलंका, नेपाल और बंगलादेश में सत्ता–परिवर्तन का प्रयोग अपने देश में दोहराने की कामना करने वाले भी पूरी तरह शांत हैं। इस पाखंड के दो स्पष्ट कारण हैं। पहला–ईरान में मुस्लिम नरसंहार उस सुविधाजनक नैरेटिव के मुताबिक नहीं है, जिसमें हर अत्याचार का दोष अक्सर तथाकथित 'हिंदू फासीवाद', 'युद्धोन्मादी यहूदी' या 'अमरीकी साम्राज्यवाद' पर मढ़ा जाता है। दूसरा–ईरान में इस्लामी व्यवस्था का जन्म वामपंथियों और मुल्ला–मौलवियों के गठजोड़ से हुआ था। 5 दशक पहले मार्क्सवादी तूदेह पार्टी और अन्य वाम गुटों ने तत्कालीन ईरानी राजा मोहम्मद रजा पहलवी के विरुद्ध मजहबी आंदोलन में निर्णायक भूमिका निभाई थी। इसलिए वामपंथी समूह अपने सहयोग से स्थापित इस्लामी तंत्र की क्रूरता पर खामोश है।वर्ष 1978 तक ईरान एक आधुनिक और अपेक्षाकृत उदार समाज था। पहलवी का अधिनायकवादी शासन चरित्र से बहुत हद तक सैकुलर रहा, जिसमें महिलाओं को शिक्षा–मताधिकार प्राप्त था और सत्ता–अधिष्ठान मजहबी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता था। पश्चिमी देशों से बढ़ती नजदीकी के कारण पहलवी के खिलाफ वामपंथियों ने इस्लामी कट्टरपंथियों से हाथ मिलाया और 'क्रांति' के नाम पर जनता को यह विश्वास दिलाया कि इस्लामी शासन ही मुक्ति का मार्ग है। परिणाम वही हुआ, सत्ता पर मुल्ला–मौलवियों का कब्जा और 'काफिर–कुफ्र' का सफाया। ईरान 1979 के बाद आग से निकलकर भट्ठी में जा गिरा। विश्वविद्यालय बंद हो गए, तो छात्र संगठन प्रतिबंधित और यहां तक कि वामपंथी विचारकों को जेलों में ठूंस दिया गया। महिलाओं को आधुनिक जीवन से बाहर निकालकर मजहबी पुलिस के माध्यम से मध्ययुगीन काल में धकेल दिया गया। पाकिस्तान और बंगलादेश इस प्रयोग के जीवित प्रमाण हैं, जहां अल्पसंख्यकों का तीव्र क्षरण, महिलाओं का बढ़ता दमन और अंतहीन सांप्रदायिक हिंसा का काला इतिहास है। पाकिस्तान में जारी सुन्नी–शिया संघर्ष सिद्ध करता है कि एक निश्चित और संकीर्ण पहचान पर बना देश अपने भीतर विविधता को सहन नहीं कर सकता। यदि डोनाल्ड ट्रम्प को वाकई लोकतंत्र–मानवाधिकारों की चिंता होती, तो वह पाकिस्तान से निकटता नहीं बढ़ाते, जहां गैर–मुसलमानों के साथ मुस्लिमों (शिया–अहमदिया सहित) को भी दीन के नाम पर प्रताडित और बलूच–सिंधी आदि विद्रोहियों का दमन किया जा रहा है। आज भी वही भारत–विरोधी शक्तियां देश में 1947 जैसी पटकथा दोहराने का प्रयास कर रही हैं। सी.ए.ए. विरोधी हिंसक प्रदर्शन से लेकर कथित किसान आंदोलन और नूपुर शर्मा आदि प्रकरण तक इसके उदाहरण हैं। यह ठीक है कि वे अब तक सफल नहीं हुए लेकिन भारत को पुनः तोडने के प्रयास अब भी जारी हैं। वही ईरान की त्रासदी वैश्विक दोहरे मापदंडों, वैचारिक अंधेपन और नैतिक पाखंड का प्रतिबिंब है।

सेवानिवृत्ति पर सुनीता विलियम्स का बड़ा संदेश

भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स इन दिनों भारत दौरे पर हैं। 22 से 25 जनवरी तक चलने वाले केरल साहित्य महोत्सव में शामिल होने के लिए सुनीता देश आई हुई हैं। 20 जनवरी को सुनीता विलियम्स ने दिल्ली के अमेरिकन सेंटर में श्आंखें सितारों पर, पैर जमीं परश सेमिनार में हिस्सा लिया, इस दौरान उन्होंने एक अहम बात कही कि इस समय दुनिया में अंतरिक्ष को लेकर एक तरह की होड़ चल रही है। कई देश चांद और अंतरिक्ष में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। लक्ष्य सिर्फ पहले पहुंचना नहीं है, बल्कि यह है कि इंसान सुरक्षित, टिकाऊ और लंबे समय तक रहने लायक तरीके से चांद पर जाए। उन्होंने यह भी कहा कि यह काम सबके फायदे, सहयोग और पारदर्शिता के साथ, लोकतांत्रिक तरीके से किया जाना चाहिए, ताकि किसी एक देश का दबदबा न हो और पूरी मानवता को इसका लाभ मिले। एक अनुभवी अंतरिक्ष यात्री के तौर पर सुनीता विलियम्स की यह बात उन तमाम सरकारों और अंतरिक्ष को अपने कारोबार का हिस्सा बनाने वाले धनपशुओं को सुननी चाहिए, जिनके लिए अंतरिक्ष भी धन कमाने और दुनिया पर दबदबा बनाने का जरिया बन गया है। जबकि शोध और अनुसंधान के नाम पर इस ब्रह्मांड से खिलवाड़ का हक उन्हें नहीं है।सुनीता विलियम्स का यह दौरा भारत के लिए खुशी का अवसर है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियां समूची मानवता को गौरवान्वित करने वाली हैं ही, देश इस बात पर और गर्व कर सकता है कि सुनीता विलियम्स की जड़ें भारत से जुड़ी हैं। खास बात ये है कि सुनीता विलियम्स ऐसे वक्त भारत आई हैं, जब नासा से उनकी सेवानिवृत्त होने की सूचना आई है। अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा में 27 साल की सेवाएं देने के बाद 27 दिसंबर, 2025 को सुनीता विलियम्स सेवानिवृत्त हुई हैं। उनका अंतिम मिशन मार्च 2025 में पृथ्वी पर लौटने के साथ पूरा हुआ। इसके बाद उन्होंने यह फैसला लिया कि अब नयी पीढ़ी के अंतरिक्ष यात्रियों के लिए रास्ता खोलने का समय आ गया है। सुनीता का कहना है कि अंतरिक्ष उनका श्सबसे पसंदीदा स्थानश्र रहा है, लेकिन अब चांद और मंगल की ओर बढ़ते मानव मिशनों में उनकी भूमिका एक प्रेरणा के रूप में रहेगी।एक अंतरिक्ष यात्री के तौर पर सुनीता विलियम्स का जीवन साहस, भरोसे और वैज्ञानिक समर्पण की मिसाल है। उनका रिटायरमेंट किसी डर का नतीजा नहीं, बल्कि एक गौरवशाली अध्याय के सम्मानजनक समापन की कहानी है। यहां डर की बात इसलिए कही गई है क्योंकि डेढ़ साल पहले जून 2024 में जब महज 8 दिनों के मिशन पर सुनीता बोइंग के स्टारलाइनर स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष के लिए रवाना हुईं तो 8 दिन करीब 9 महीनों तक खिंच गए। लेकिन धरती के पार अंतरिक्ष में बैठी सुनीता विलियम्स ने अद्भुत हिम्मत के साथ इस मिशन को भी पूरा किया। यह स्टारलाइनर का पहला क्रू मिशन था और इसे एक टेस्ट फ्लाइट के तौर पर देखा जा रहा था, लेकिन तकनीकी खराबियों के चलते मिशन तय समय पर पूरा नहीं हो सका। हालात ऐसे बने कि स्टारलाइनर बिना क्रू के वापस लौट आया और सुनीता विलियम्स को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर ही रुकना पड़ा। इस दौरान सोशल मीडिया और कुछ अंतरराष्ट्रीय मीडिया में यह चर्चा शुरू हो गई कि क्या सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष में श्फंसश गई हैं। अंग्रेजी वेबसाइट एनडीटीवी के साथ बातचीत में जब उनसे इस बारे में पूछा गया कि क्या उन्होंने खुद को फंसा हुआ महसूस किया, तो उन्होंने साफ कहा, श्मैं खुद ऐसा महसूस नहीं करती। मुझे प्रक्रिया पर पूरा भरोसा हैश हम स्पेसक्राफ्ट कैसे बनाते हैं, कैसे लॉन्च करते हैं और कैसे फैसले लेते हैं।श नासा के मुताबिक स्टारलाइनर मिशन में आई दिक्कतें भविष्य के कमर्शियल स्पेस मिशनों के लिए अहम सबक साबित हुईं। खुद सुनीता ने कहा कि वे पहले से जानती थीं कि यह एक टेस्ट फ्लाइट है और इसमें दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में आईएसएस क्रू का हिस्सा बनना योजना का ही हिस्सा था।सुनीता विलियम्स की केवल यही उपलब्धि नहीं है, बल्कि उनके नाम कई और रिकॉर्ड भी शामिल हैं। 1998 में नासा के लिए चुनी गईं सुनीता विलियम्स ने तीन स्पेस मिशन में कुल 608 दिन अंतरिक्ष में बिताए, जो किसी भी नासा अंतरिक्ष यात्री के लिए दूसरा सबसे बड़ा आंकड़ा है। उन्होंने इस दौरान 9 स्पेसवॉक किए, जिनकी कुल अवधि 62 घंटे 6 मिनट रही। यह किसी भी महिला अंतरिक्ष यात्री द्वारा किया गया सबसे बड़ा रिकॉर्ड है। वे अंतरिक्ष में मैराथन दौड़ने वाली दुनिया की पहली इंसान भी बनीं हैं। इसके साथ ही सुनीता विलियम्स आईएसएस की कमांडर भी रहीं जिसका मौका बहुत कम महिलाओं को मिला है।नासा के प्रशासक जेरेड आइजकमैन ने सुनीता विलियम्स की सेवानिवृत्ति पर कहा कि, श्सुनीता विलियम्स इंसानी स्पेसफ्लाइट में एक अग्रदूत रही हैं। विज्ञान और तकनीकी को आगे बढ़ाने में उनके काम ने चांद पर आर्टेमिस मिशन और मंगल की ओर बढ़ने की नींव रखी है। उनकी असाधारण उपलब्धियां आने वाली पीढ़ियों को बड़े सपने देखने, उसकी सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।श जेरेड आइजकमैन की ये बात शब्दशरू सही है। सुनीता विलियम्स से पहले कल्पना चावला ने भी भारत का नाम रौशन किया था। वे अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला थीं। फरवरी 2003 में अंतरिक्ष शटल कोलंबिया की दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी। अगर कल्पना चावला आज होतीं तो शायद वो भी ऐसे ही अनूठे रिकार्ड रचकर भारत का परचम लहरातीं। हालांकि सुनीता विलियम्स और कल्पना चावला दोनों ही युवा पीढ़ी और विशेषकर लड़कियों के लिए मिसाल हैं कि हिम्मत और लगन हो तो अंतरिक्ष को छूना भी मुमकिन है।

शिक्षित लोग क्यों चुनते हैं आतंक की राह

ओ.पी. सिंह

आतंकवाद को अक्सर गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक बहिष्कार का परिणाम माना जाता है। लेकिन भारत सहित दुनिया भर के अनुभव बताते हैं कि यह पूरी सच्चाई नहीं है। हाल के वर्षों में ऐसे मामले सामने आए हैं, जिनमें उच्च शिक्षित और पेशेवर रूप से प्रशिक्षित लोग आतंकवादी गतिविधियों में शामिल पाए गए। अल–फलाह विश्वविद्यालय से जुड़े चिकित्सकों का मामला इसी असहज वास्तविकता की ओर संकेत करता है। प्रश्न उठता है कि शिक्षा, जो विवेक और समझ विकसित करने का माध्यम मानी जाती है, कभी–कभी चरमपंथ को रोकने में क्यों विफल हो जाती है? शिक्षा अपेक्षाएं बढ़ाती है। जब ये अपेक्षाएं सीमित अवसरों, संस्थागत अव्यवस्था या व्यक्तिगत असफलताओं से टकराती हैं, तो निराशा तीव्र हो जाती है। पुलिसिंग के अनुभव से यह स्पष्ट है कि सापेक्ष वंचना, यानी जो मिलना चाहिए था और जो मिला, उसके बीच का अंतर, अक्सर पूर्ण गरीबी से अधिक प्रभावी होता है। शिक्षित व्यक्ति असफलता को भाग्य नहीं, अन्याय के रूप में देखने लगता है। विश्वविद्यालय और पेशेवर संस्थान कौशल तो सिखाते हैं, लेकिन सोहबत और उद्देश्य प्रदान करने में अक्सर पीछे रह जाते हैं। घर से दूर, परिचित सामाजिक–सांस्कृतिक ढांचे से बाहर काम कर रहे युवा पेशेवर अकेलेपन का अनुभव कर सकते हैं। ऐसे समय में संगठित वैचारिक समूह–धार्मिक हों या राजनीतिक–स्पष्टता, पहचान और उद्देश्य देते हैं। वे व्यक्तिगत असमंजस को सामूहिक मिशन में बदल देते हैं। एक कम चर्चित पहलू यह भी है कि शिक्षा तर्कशक्ति को तेज करती है लेकिन नैतिक संयम अपने–आप नहीं देती। उच्च शिक्षा में सिखाए गए औजार– तर्क, अमूर्तन और प्रणालीगत सोच, हिंसा को चुनौती देने के लिए भी उपयोगी हैं और उसे सही ठहराने के लिए भी। चरमपंथी विचारधाराएं सुव्यवस्थित कथानकों पर आधारित होती हैं, जिनमें हिंसा को आवश्यक, रक्षात्मक या नैतिक रूप से श्रेष्ठ बताया जाता है। शिक्षित व्यक्ति ऐसे तर्कों को अधिक कुशलता से आत्मसात कर सकता है। यह अज्ञान नहीं, बल्कि बुद्धि का दुरुपयोग है। संगठनात्मक दृष्टि से शिक्षित पेशेवर आतंकवादी नैटवर्क के लिए उपयोगी होते हैं। ऐसे नैटवर्क भी किसी जटिल संगठन की तरह काम करते हैं–उन्हें वित्त, लॉजिस्टिक्स, तकनीकी दक्षता और विश्वसनीयता चाहिए। डॉक्टर, इंजीनियर और प्रशासक ये सब प्रदान करते हैं। उनकी मौजूदगी नैटवर्क को क्षमता देती है और गंभीरता का संकेत भी। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रों में चरमपंथी संगठन पेशेवरों की सक्रिय भर्ती करते रहे हैं। संस्थागत कमजोरियां इस खतरे को बढ़ाती हैं। विश्वविद्यालय और पेशेवर निकाय सुरक्षा एजेंसियां नहीं हैं और उन्हें होना भी नहीं चाहिए लेकिन कमजोर प्रशासन, अपर्याप्त पृष्ठभूमि जांच और सीमित मार्गदर्शन ऐसे ब्लाइंडस्पॉट सृजित करते हैं, जिनका दुरुपयोग संभव है। जब संस्थान केवल डिग्री और परिणाम पर केंद्रित रहते हैं और नैतिकता, नागरिक जिम्मेदारी तथा छात्र–कल्याण को गौण मानते हैं, तो प्रारंभिक चेतावनी संकेत अनदेखे रह जाते हैं। राजनीतिक संदर्भ इस प्रक्रिया को पूरा करता है। जब लोगों को लगता है कि शिकायतों के समाधान, सहभागिता या सुधार के वैध रास्ते प्रभावी नहीं हैं, तो कुछ लोग, गलत निष्कर्ष पर पहुंचते हुए, ड्क्षहसा को ही विकल्प मान लेते हैं। शिक्षा इस असंतोष को और तीखा कर सकती है क्योंकि वह यह भी दिखाती है कि व्यवस्था कैसी होनी चाहिए और यह भी कि वह कितनी बार वैसी नहीं होती। वास्तव में, दीर्घकाल में शिक्षा ड्क्षहसा के विरुद्ध सबसे मजबूत सुरक्षा कवच है, लेकिन शिक्षा अपने–आप में अधूरी है। ज्ञान के साथ नैतिक प्रशिक्षण, पेशेवर मार्गदर्शन और आगे बढने के विश्वसनीय अवसर भी आवश्यक हैं। पुलिसिंग से सीख रू पुलिस के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण सबक यह है कि कट्टरपंथ अक्सर खुले टकराव से नहीं, बल्कि संस्थागत खाली जगहों से पनपता है। प्रारंभिक संकेत–अलगाव, अचानक वैचारिक कठोरता, सामाजिक विच्छेदन अपराध नहीं होते, लेकिन चेतावनी अवश्य होते हैं। सुरक्षा एजेंसियों, शैक्षणिक संस्थानों और पेशेवर निकायों के बीच सीमित, नियमबद्ध और गैर–दमनकारी संवाद की आवश्यकता है। समय रहते मार्गदर्शन और हस्तक्षेप होना चाहिए। जो विश्वविद्यालय डॉक्टर, इंजीनियर और प्रशासक तैयार करते हैं, उन्हें स्वयं को केवल डिग्री देने वाली फैक्ट्रियां नहीं, बल्कि नागरिक संस्थान मानना होगा। अन्यथा जोखिम यह नहीं है कि बड़ी संख्या में लोग कट्टरपंथी बन जाएंगे, बल्कि यह है कि कुछ अत्यधिक कुशल लेकिन सामाजिक रूप से अलग–थलग व्यक्ति, हिंसक विचारधाराओं को बुद्धि और दक्षता प्रदान कर देंगे। यह चुनौती केवल सुरक्षा एजेंसियों की नहीं, बल्कि संस्थानों, नीति–निर्माताओं और समाज सभी की है और इसे नजरअंदाज करना महंगा पड़ सकता है।

नितिन नवीन के लिए शुभ सगुन

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को पूर्णकालिक राष्ट्रीय अध्यक्ष बनते ही नितिन नवीन ने पार्टी को एक उपलब्धि प्रदान कर दी है। नितिन नवीन के आगमन के साथ ही भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में एक पार्टी जुड़ गयी है। यह पार्टी भी उस राज्य की है जहां इसी साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। भाजपा ने दक्षिण भारत में अपनी पकड़ मजबूत कर ली है लेकिन तमिलनाडु में अभी उसका आधार बहुत कमजोर है। तमिलनाडु में इसी साल चुनाव होने हैं। यहां पर अन्ना द्रमुक और द्रमुक ही दो बड़ी पार्टियां मुख्य प्रतिद्वन्द्वी हैं। यही दोनों बारी–बारी से सत्ता पर कब्जा करती रहती हैं। इस समय द्रमुक की सरकार है जिसके साथ कांग्रेस जुड़ी हुई है। अन्ना द्रमुक की कमान कभी जयललिता संभालती थीं। उनके निधन के बाद पार्टी में विभाजन हो गया। एक गुट के साथ भाजपा का गठबंधन पहले ही हो चुका है। अब टीटीवी दिनाकरन ने 21 जनवरी को घोषणा की है कि उनकी पार्टी एएमएमके एनडी के साथ जुड़ जाएगी। इस प्रकार तमिलनाडु में 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले ही एक नया राजनीतिक समीकरण बन गया है। इससे यह तो नहीं कहा जा सकता कि भाजपा को तमिलनाडु में सत्ता मिल जाएगी लेकिन उसका प्रभाव वहां निश्चित रूप से बढ़ेगा। नितिन नवीन की बड़ी चुनौतियों में 2026 के विधानसभा चुनाव भी हैं। ध्यान रहे कि पीएम नरेन्द्र मोदी 23 जनवरी को तमिलनाडु में रैली कर चुनाव अभियान शुरू करेंगे। दिनाकरण, तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री और एआईएडीएमके की प्रमुख रहीं जयललिता की सहयोगी वीके शशिकला के भतीजे हैं। एआईएडीएमके से निकाले जाने के बाद दिनाकरण ने 2018 में एएमएमके का गठन किया था। एक समय शशिकला ही पर्दे के पीछे से एआईएडीएमके को चलाती थीं लेकिन समय के साथ–साथ उनकी पकड़ पार्टी पर कमजोर पड़ती गई। उन्हें 2021 में एआईएडीएमके से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था। एएमएमके की दक्षिण और मध्य तमिलनाडु में रहने वाले थेवर समुदाय में मजबूत पकड़ है लेकिन एएमएमके को एनडीए में रहते हुए 2024 के लोकसभा चुनाव में थेनी और तिरुचिरापल्ली सीट दी गई थी। दोनों ही सीटों पर उसे हार का सामना करना पड़ा था। थेनी में तो दिनाकरण खुद ही उम्मीदवार थे। उन्हें डीएमके के थांगा तमिलसेल्वम ने हरा दिया था। वहीं तिरुचिरापल्ली में एएमएमके को चौथे स्थान से संतोष करना पड़ा था। दिनाकरण,शशिकला और पूर्व पन्नीरसेल्वम भी थेवर समुदाय से ही आते हैं। वहीं पलानीस्वामी गौंडर समुदाय से आते हैं जिसका पश्चिमी तमिलनाडु में अच्छा प्रभाव है। एएमएमके ने सितंबर 2025 मेंएनडीए से अलग होने का फैसला किया था। पार्टी ने आरोप लगाया था कि बीजेपी, पलानीस्वामी के नेतृत्व वाली एआईएडीएमके को खुश करने के लिए उसे नजरअंदाज कर रही है, दिनाकरण ने यह भी कहा था कि वह कभी भी ईपीएस को एनडीए के मुख्यमंत्री उम्मीदवार के तौर पर स्वीकार नहीं करेंगे।

रचना सक्सेना की कुण्डलियाँ

विनती करती हूँ यही, खड़ी जोडकर हाथ।
नमन करूँ माँ शारदे, शीश झुकाकर माथ।
शीश झुकाकर माथ, यही वर माँगू तुझसे।
दूर करो अज्ञान, काम हो उत्तम मुझसे।।
कहती रचना आज, पाप की करती गिनती।
मत भटकूँ अब राह, करूँ मैं इतनी विनती।।

धरती ने ओढ़ी चुनर, पीली- पीली आज।
आया अब मधुमास है, गूँज रही आवाज।।
गूँज रही आवाज, कूकती कोयल काली।
उपवन खिलते फूल, मुदित होता है माली।।
रचना अब उल्लास, बसंती ऋतु है भरती।
पीली सरसों देख, चुनर ज्यो ओढ़े धरती।।

रचना सक्सेना
अलोपीबाग
प्रयागराज

त्रिप्ति डिमरी ने शेयर किया विशाल भारद्वाज की 'ओ' रोमियो' में काम करने का अनुभव, कहा यह बहुत शानदार था, लेकिन चुनौतीपूर्ण भी

> उन्होंने कहा,"मैंने अतुल मोंगे सर के साथ एक्टिंग वर्कशॉप की। वह वाकई कमाल के हैं। आप उनके वर्कशॉप में यह सोचकर जाते हैं कि एक्टिंग सीखेंगे, लेकिन वहां से आप अपने बारे में और जिंदगी के बारे में बहुत कुछ सीखकर लौटते हैं।

बॉलीवुड एक्ट्रेस त्रिप्ति डिमरी इन दिनों विषाल भारद्वाज के निर्देशन में बनी फिल्म 'ओ' रोमियो' को लेकर काफी चर्चा में हैं। इस फिल्म में वह एक्टर शाहिद कपूर के साथ नजर आएंगी। इसी बीच बीते बुधवार फिल्म का ट्रेलर लॉन्च इवेंट आयोजित किया गया, जहां त्रिप्ति ने फिल्म में अपने किरदार अफ्शा को लेकर खुलकर बात की और बताया कि यह रोल उनके लिए भावनात्मक रूप से काफी गहरा था। उन्होंने यह भी बताया कि शूटिंग के दौरान शाहिद कपूर और अविनाश तिवारी ने हर कदम पर उनका साथ दिया। त्रिप्ति ने कहा, फिल्म 'ओ' रोमियो' में काम करने का अनुभव बहुत शानदार था, लेकिन थोड़ा चुनौतीपूर्ण भी। अच्छी बात यह रही कि विशाल सर हर समय मेरे साथ थे और शाहिद भी। वह सबसे सपोर्टिव को–एक्टर हैं। अविनाश तिवारी भी हमेशा मदद के लिए मौजूद रहे। इस फिल्म में मेरे जितने भी को–एक्टर्स थे, सभी बहुत सहयोगी थे। सच कहूं तो उनके बिना शायद मैं यह रोल निभा ही नहीं पाती। त्रिप्ति ने यह भी बताया कि उन्होंने अपने किरदार को बेहतर तरीके से समझने के लिए एक्टिंग वर्कशॉप्स की। उन्होंने कहा,"मैंने अतुल मोंगे सर के साथ एक्टिंग वर्कशॉप की। वह वाकई कमाल के हैं। आप उनके वर्कशॉप में यह सोचकर जाते हैं कि एक्टिंग सीखेंगे, लेकिन वहां से आप अपने बारे में और जिंदगी के बारे में बहुत कुछ सीखकर लौटते हैं। उनकी मदद से मैं अपने किरदार की गहराई को समझ पाई। यह सफर बहुत खूबसूरत रहा। और जब फिल्म विशाल भारद्वाज सर की हो, तो वह अपने आप में एक एक्टिंग क्लास होती है। वह रोज नए–नए चौलेंज देते रहते हैं। हर एक्टर को यह अनुभव जरूर लेना चाहिए।" बता दें, 'ओ' रोमियो' में अफ्शा के किरदार के जरिए त्रिप्ति डिमरी फिल्म की भावनात्मक कहानी को आगे बढ़ाती नजर आएंगी।इस फिल्म में शाहिद कपूर और त्रिप्ति डिमरी के अलावा नाना पाटेकर, अविनाश तिवारी, दिशा पटानी, अरुणा ईरानी, विक्रांत मैसी, तमन्ना भाटिया और फरीदा जलाल जैसे कई कलाकार नजर आएंगे। विषाल भारद्वाज के निर्देशन में बनी 'ओ' रोमियो' 13 फरवरी 2025 को, वैलेंटाइन वीक के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

बॉर्डर 2 में सनी देओल ने खास अंदाज में दी पिता धर्मेंद्र को श्रद्धांजलि

सनी देओल की अगुआई वाली फिल्म बॉर्डर 2 आज 23 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। दर्शक इस पर अच्छा रिस्पॉन्स दे रहे हैं। फिल्म बॉर्डर के सीक्वल के क्रेडिट ने दर्शकों का ध्यान खींचा है। सनी देओल ने अपने पिता और दिवंगत अभिनेता धर्मेंद्र को खास अंदाज में श्रद्धांजलि दी है। धर्मेंद्र का 24 नवंबर 2025 को निधन हो गया था। फिल्म श्बॉर्डर 2श के शुरुआत में सभी कलाकारों के नाम दर्शाए गए हैं। हालांकि इसमें जिस तरह से सनी देओल का नाम दर्शाया गया है उससे फैंस हैरान हो गए हैं। क्रेडिट में सनी देओल के नाम के सामने लिखा आता है सनी देओल (धर्मेंद्र का बेटा) इस नाम ने दर्शकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। दर्शक यह मान रहे हैं कि सनी देओल और फिल्म की टीम ने दिवंगत अभिनेता को श्रद्धांजलि दी है। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने सनी देओल के नाम के आगे धर्मेंद्र का नाम जोड़े जाने पर प्रतिक्रिया दी है। एक यूजर ने लिखा है एक सुपरस्टार का परिचय देने का बहुत अच्छा तरीका है। एक और यूजर ने लिखा है बॉर्डर 2 की टीम की तरफ से धर्मेंद्र जी को बहुत अच्छी तरह से श्रद्धांजलि दी गई है। एक और यूजर ने लिखा है सनी देओल जिन्हें शुरू में धर्मेंद्र के बेटे के रूप में पेश किया जाता है, वे सब कुछ अलग करते हैं।

काले चश्मे में खूब जचीं करीना कपूर खान, कैजुअल लुक के दीवाने फैंस ने लिखा– क्वीन हैं बेबो

करीना कपूर खान इन दिनों अपनी आगामी फिल्म दायरा को लेकर लगातार चर्चा में बनी हुई हैं। फिल्म की शूटिंग लगभग खत्म हो चुकी है और पोस्ट प्रोडक्शन का काम चल रहा है। इसी बीच करीना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहा है, जिसमें वह मुंबई एयरपोर्ट में कैजुअल लुक में नजर आईं। करीना कपूर खान आज सुबह जब मुंबई एयरपोर्ट पर पहुंचीं तो पैपराजी ने जमकर फोटो क्लिक की। इस दौरान ब्लू जींस और रेड स्वेटशर्ट में करीना बेहद स्टाइलिश नजर आईं। इस लुक को करीना ने अपने ब्लैक सनग्लासेस से इनहैंस किया है। करीना के फैंस ने उनके इस लुक पर लाल दिल वाले और फायर इमोजी शेयर किया है। एक फैन ने लिखा, क्वीन हैं बेबो, एक दूसरे फैन ने पूछा, श्कब रिलीज हो रही है आपकी फिल्म श्दायरा। फिल्म दायरा मेघना गुलजार द्वारा निर्देशित फिल्म है। यह एक क्राइम–ड्रामा थ्रिलर फिल्म है। इस फिल्म में करीना कपूर खान के अलावा पृथ्वीराज सुकुमारन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। यह फिल्म 2026 में रिलीज होगी। यह फिल्म अपराध, न्याय और समाज की जटिलताओं को दर्शाएंगी। इस फिल्म में पृथ्वीराज एक पुलिस अफसर की भूमिका में हैं और करीना कपूर खान भी एक महत्वपूर्ण किरदार निभा रही हैं।

दुनिया की तरह इंडस्ट्री भी बदल गई..जावेद जाफरी ने एआर रहमान के सपोर्ट में कही बात

बॉलीवुड के मशहूर संगीतकार एआर रहमान अपने कम्युनल वाले बयान के बाद से विवादों में घिरे हुए हैं। उनके इस स्टेटमेंट के बाद हर कोई इस पर अपनी राय दे रहा है और उन पर निशाना साध रहा है। हालांकि, माफी मांगने के बाद भी रहमान अपने बयान को लेकर ट्रोल हो रहे हैं। इसी बीच अब हाल ही में एक्टर जावेद जाफरी ने सिंगर के सपोर्ट में अपनी बात कही है। जावेद जाफरी ने आईएनएस से बात करते हुए कहा, दुनिया की तरह इंडस्ट्री भी बदल गई है। डिजिटल। एआई। दुनिया बदल रही है। फैशन बदल रहा है, खान–पान बदल रहा है। मूल्य बदल रहे हैं। जाहिर है, सोच का तरीका भी बदल रहा है। मुझे हाल ही में पता चला है कि जेनरेशन जेड या अल्फा पीढ़ी के लोगों का ध्यान सिर्फ 6 सेकंड तक ही टिकता है। एक्टर ने कहा चौनल प्रमुखों का कहना है कि अगर आप इसे 6 सेकंड में कैद नहीं कर सकते, तो यह खत्म हो गया। हम इतनी तेजी से बदल रहे हैं। बस यही बात है। ठीक है। कुछ ढांचा तो रहा है। कुछ अवसर भी मिले हैं। आप लंबी कहानी सुना सकते हैं, लेकिन फिल्म में समय सीमित होता है। विकल्प तो हैं, लेकिन साथ ही व्यापार भी है। आंकड़े भी हैं। आप एक प्रोजेक्ट बना रहे हैं, फिल्म नहीं। एआर रहमान ने बीबीसी को दिए इंटरव्यू में कहा था कि पिछले 8 साल से उन्हें बॉलीवुड में काम मिलना बंद हो गया है। ऐसा सांप्रदायिकता की वजह से हो सकता है। वहां पर जो लोग बैठे हैं, वो क्रिएटिव नहीं हैं। सिंगर के इस बयान की काफी आलोचना हुई थी, जिसके बाद उन्होंने एक वीडियो शेयर कर माफी मांगी थी और कहा था कि उनके कहने का यह उद्देश्य नहीं था।

शादी के बाद इन अभिनेत्रियों ने फिल्मों से बनाई दूरी, बच्चे की परवरिश में नहीं छोड़ी कोई कमी

बॉलीवुड की कई अभिनेत्रियां यह साबित करती हैं कि करियर के साथ फैमिली को बैलेंस करना संभव है। उन्होंने शादी और बच्चों के बाद फिल्मों से दूरी बनाई, लेकिन बच्चे की परवरिश को सबसे ऊपर रखा। इससे वे न सिर्फ अच्छी मां बनीं, बल्कि अपनी जिंदगी को और खुशहाल बनाया। ऐश्वर्या राय बच्चन बॉलीवुड की सबसे खूबसूरत और सफल अभिनेत्रियों में से एक हैं। उन्होंने 2007 में अभिषेक बच्चन से शादी की थी। शादी के बाद भी वे फिल्मों में काम करती रहीं, लेकिन 2011 में उनकी बेटी आराध्या के जन्म के बाद उन्होंने करियर से ब्रेक ले लिया। ऐश्वर्या ने कहा कि मां बनने के बाद उनकी प्राथमिकता बदल गई और वे अपनी बेटी के साथ ज्यादा समय बिताना चाहती थीं। हालांकि, वे बीच–बीच में कुछ फिल्मों में नजर आईं, लेकिन पूरा फोकस फैमिली पर रहा। कटरीना कैफ ने 2021 में विक्की कौशल से शादी की। शादी के बाद वे कुछ फिल्मों में नजर आईं, लेकिन 2025 में उनके बेटे के जन्म के बाद उन्होंने करियर से ब्रेक ले लिया। कथित तौर पर कटरीना ने कहा था कि शादी और फैमिली उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन शादी के बाद विक्की ने उन्हें वर्क–लाइफ बैलेंस सिखाया। कियारा आडवाणी ने 2023 में सिद्धार्थ मल्होत्रा से शादी की।

दो दीवाने सहर में 'आसमा' बना इस सीजन का फ्रेश साउंड अश्वफ लव, मृणाल–सि)ांत की केमिस्ट्री ने जीता दिल

जी स्टूडियोज और भंसाली प्रोडक्शंस की अपकमिंग रोमांटिक फिल्म 'दो दीवाने शहर में' पहले ही अपने खूबसूरत और रियल टीजर से दर्शकों के दिलों में खास जगह बना चुकी है। यह फिल्म उन लोगों के लिए एक परफेक्ट वैलेंटाइन ट्रीट लग रही है, जो इम्परफेक्ट, कंफ्यूजिंग और खूबसूरती से उलझे हुए प्यार में विश्वास रखते हैं। टीजर ने जहां इस यूनिक लव स्टोरी का टोन बेहद सेंसिटिव और रिलेटेबल रखा, वहीं अब मेकर्स ने फिल्म का पहला गाना 'आसमा' रिलीज कर दिया है, जिसने दर्शकों की एक्साइटमेंट को और बढ़ा दिया है। 'आसमा' अपने आप में एक क्लटर–ब्रेकिंग रोमांटिक सॉन्ग है, जो आम बॉलीवुड लव सॉन्ग्स से बिल्कुल अलग फील देता है। गाने की मीठी धुन और स्क्रीन पर चलती कहानी मिलकर एक ऐसा एहसास पैदा करती हैं, जो आज के दौर के असली और अधूरे प्यार को दर्शाता है। यह गाना न तो ओवरड्रामैटिक है और न ही जरूरत से ज्यादा फिल्मी– बल्कि सादा, सच्चा और दिल से जुड़ने वाला है। गाने में मृणाल ठाकुर और सिद्धांत चतुर्वेदी की केमिस्ट्री बेहद क्यूट और नेचुरल नजर आती है। दोनों के बीच का साइलेंट कनेक्शन, छोटे–छोटे मोमेंट्स और बिना ज्यादा कहे बहुत कुछ बयां करने वाला अंदाज गाने को और भी खास बना देता है। उनकी ऑन–स्क्रीन बॉन्डिंग इस बात का सबूत है कि यह फिल्म एक रियल और सरप्राइजिंग लव स्टोरी लेकर आ रही है। जी स्टूडियोज और भंसाली प्रोडक्शंस प्रस्तुत 'दो दीवाने शहर में' में लीड रोल में मृणाल ठाकुर और सिद्धांत चतुर्वेदी नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन रवि उद्यवार ने किया है और इसे संजय लीला भंसाली, प्रेरणा सिंह, उमेश कुमार बंसल और भरत कुमार रंगा ने रवि उद्यवार फिल्म्स के सहयोग से प्रोड्यूस किया है। यह फिल्म 20 फरवरी 2026 को थिएटर्स में रिलीज होने जा रही है और माना जा रहा है कि यह इस वैलेंटाइन सीजन की सबसे रियल और दिल से जुड़ने वाली लव स्टोरी साबित हो सकती है।

कैंसर का खतरा बढ़ा सकती हैं किचन में की गई ये गलतियां, हो जाएं सावधान

हमारे रोजमर्रा के खान–पान में जो चीजें शामिल होती हैं उनकी क्वालिटी का असर हमारी हेल्थ पर भी पड़ता है। खाने–पीने से जुड़ी कुछ गलतियां गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है। बता दें कि अनहेल्दी लाइफस्टाइल और खान–पान के चलते हाई कोलेस्ट्रॉल, डायबिटीज, थायरॉयड और मोटापा जैसी बीमारियों का रिस्क बढ़ रहा है। वहीं, किचन में की जाने वाली कई गलतियों के कारण कैंसर का खतरा भी बढ़ सकता है। यहां जानें कुछ ऐसी ही कॉमन किचन मिस्टेक्स के बारे में जो कैंसर का रिस्क बढ़ा सकती हैं।

ओवन में खाना गर्म करना

प्लास्टिक के डिब्बों में रखना ओवन में गर्म करना भी

स्वास्थ्य के लिए बहुत नुकसानदायक माना जाता है। इस तरह से खाना गर्म करने से एंडोक्रिन डिस्ट्रक्टिंग नामक एक हानिकारक खतरनाक केमिकल रिलीज होता है जो खाने–पीने की चीजों के साथ घुलकर शरीर में पहुंच जाता है। इससे, हेल्थ पर खराब असर पड़ता है और कैंसर का रिस्क बढ़ जाता है।

प्लास्टिक के बर्तन में खाना

लंच बॉक्स से लेकर मिल्क मग तक, प्लास्टिक से बनी कई खूबसूरत चीजें हमारे किचन में हैं और लोग इन चीजों का इस्तेमाल भी बहुत ज्यादा कर रहे हैं। प्लास्टिक की प्लेट में खाना खाने से लेकर प्लास्टिक के डिब्बों में लंच

पैक करके बच्चों को स्कूल में भेजने जैसे काम लोग करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि प्लास्टिक के इन बर्तनों में खाना खाने से आपको नुकसान हो सकता है। दरअसल, प्लास्टिक के बर्तनों में गर्म खाना रकने से प्लास्टिक में मौजूद हानिकारक केमिकल्स खाने में घुल जाते हैं।

प्लास्टिक की बोतल से पानी पीना

प्लास्टिक का सबसे कॉमन इस्तेमाल है पीने का पानी स्टोर करने के लिए है। मिनरल वॉटर से लेकर कोल्ड्रिंक जैसी चीजें भी प्लास्टिक बोतल में पैक होकर मिलती हैं। इसी तरह घर में बड़ों से लेकर स्कूल जाने वाले बच्चों को भी प्लास्टिक की बोतल से पानी पीने की आदत होती है। लेकिन, प्लास्टिक की बोतल में पानी पीने से पेट और आंतों को नुकसान पहुंच सकता है जिससे कैंसर का रिस्क बढ़ता

है। वहीं, गर्म पानी भी प्लास्टिक की बोतल में भरने से हानिकारक केमिकल्स तेजी से और ज्यादा मात्रा में पानी में घुलते हैं जिससे आपको नुकसान हो सकता है।

कई बार खाना बनाते समय वह ज्यादा पक जाता है या जल जाता है और यह जला खाना खाने से हेल्थ को नुकसान हो सकता है। जलने के बाद खाने में एक्रिलामाइड नाम का केमिकल उत्पन्न होता है जो खाने में मिक्स होकर पेट में पहुंच जाता है। यह केमिकल कैंसर का कारण बनता है। इसीलिए, जला हुए खाना नहीं खाना चाहिए।

आलसी बच्चों को आत्मनिर्भर बनाएंगे ये 4 टिप्स

कुछ बच्चे सेल्फ मोटिवेटेड होते हैं। उन्हें अपना काम बताने की जरूरत नहीं होती है। वे दिनभर एक्टिव रहते हैं। वे अपने कपड़े और स्कूल से आने के बाद जूते सही जगह पर रखते हैं। साथ ही उन्हें अपने होमवर्क और घर के काम करने के लिए भी कहने की जरूरत नहीं होती है लेकिन कुछ बच्चे काफी आलसी और कम प्रेरित होते हैं। उन्हें हर काम के लिए बहुत बोलना पड़ता है। कई बार तो पेरेंट्स के डांटने के बाद भी बच्चा अपना काम समय पर नहीं करता है। ऐसे जिद्दी बच्चों को अगर आप मार–पीट को लाइन में लाने की कोशिश करेंगे तो बच्चा और बिगड़ सकता है और शायद आपकी बात न सुनें, इसलिए आपको धैर्य रखकर जरुरत है इन टिप्स के साथ बच्चों को समझाने की, ताकि वो अपने काम की जिम्मेदारी खुद से लें....

लक्ष्य निर्धारित करें

रोजाना अपने बच्चे के लिए उनके काम से जुड़ा कोई न कोई लक्ष्य जरूर निर्धारित करें। इससे बच्चे के मन में काम को लेकर उत्साह बन रहता है। बहुत ज्यादा काम बताने की जगह बच्चों को छोटे–मोटे काम दें। जैसे पौधों में पानी देना, अपने जूते जगह पर रखना और अपने स्कूल के कपड़े उचित जगह पर रखना आदि। इन लक्ष्यों को पूरा करने के बाद बच्चों को इनाम के रूप में कुछ स्पेशल चीजें खाने को दे सकते हैं। इससे उनका मन लगा रहता है और अगली बार वह पूरी खुशी के साथ काम करते हैं। अपना स्वयं का काम करने के लिए आप बच्चों की मदद कर सकते हैं ताकि वह अपना सारा काम स्कूल से आने के बाद कर सकें।

योजना बनाएं

बच्चे के साथ मिलकर आने वाले दिन के लिए आप शाम में ही योजना बनाएं। इससे बच्चे में काम पूरा करने और काम को

समय पर करने की भी आदत बनी रहती है। इसके अलावा सुबह उठने पर वह आलस भी कम करते हैं। इस योजना में आप बच्चे के काम, खेलने का समय, पढ़ने और खाने–पीने का समय सभी शामिल करें। यह बच्चे के भविष्य के लिए भी काफी लाभदायक साबित हो सकता है।

बच्चे के काम में रूचि लें

कई बार बच्चे का किसी काम में इसलिए भी मन नहीं लगता है क्योंकि पेरेंट्स उनके काम में दिलचस्पी नहीं लेते हैं। वे बच्चे को काम करवाना बोझ समझते हैं या उन्हें होमवर्क करवाना एक जरूरत। इन कारणों से बच्चे का भी काम में मन नहीं लगता है। वह भी काम को बस करने के लिए या बोझ समझकर छोड़ देता है इसलिए हमेशा बच्चे के काम में रूचि लें और उन्हें ये प्रेरणा दें कि हर काम को ईमानदारी और पूरी मेहनत से करना चाहिए। इसके लिए आप बच्चे को प्रेरक कहानी सुना सकते हैं या खुद भी उदाहरण बन सकते हैं।

अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित जरूर करें

कई बार पेरेंट्स अपने बच्चे से इतनी ज्यादा उम्मीद करने लगते हैं कि वह अपने बच्चे की छोटी–बड़ी खुशी में भी और ज्यादा अच्छा की चाहत करते हैं। इससे बच्चे की अच्छा करने की चाहत प्रभावित होती है। बल्कि अगर आप उन्हें अपना काम समय पर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो वे और अच्छा करने के लिए उत्साहित होते हैं और स्कूल में भी अच्छा करते हैं। आप बच्चों के साथ घर पर भी योग या एक्सरसाइज भी कर सकते हैं। जो उन्हें भविष्य में स्वस्थ रखने में मदद करती है। फिजिकल एक्टिविटी बच्चों को अपने काम समय पर करने में भी मदद कर सकती है।

एग्जाम के कारण तनाव में जा सकते हैं बच्चे, तनावग्रस्त दिखने पर पेरेंट्स न करें इग्नोर

जैसे–जैसे परीक्षा नजदीक आती है वैसे–वैसे बच्चे स्ट्रेस का शिकार होने लगते हैं। शिक्षकों और परिवार वालों की उम्मीदें भी बच्चे के तनाव का कारण बन सकती है। कई बार तो बच्चे इतना तनाव ले लेते हैं कि पढ़ाई में भी अच्छे से ध्यान नहीं लगा पाते। इसके अलावा एग्जाम के स्ट्रेस के कारण बच्चे के मानसिक और शारीरिक दोनों रुपों से प्रभावित होते हैं। पेरेंट्स बच्चे के तनाव का कारण जानकर उनकी समस्या से निकलने में मदद कर सकते हैं। चलिए आपको बताते हैं एग्जाम का तनाव होने पर बच्चे में क्या–क्या लक्षण दिख सकते हैं...

व्यवहार में बदलाव आना

परीक्षा का समय नजदीक आने पर यदि बच्चे के व्यवहार में बदलाव दिख रहा है तो यह तनाव का कारण हो सकता है। इसके अलावा यदि बच्चा शांत या मायूस रहने लगे तो भी उसे स्ट्रेस हो सकता है। इसके अलावा यदि बच्चा हंसमुख और ज्यादा बोलने वाला है लेकिन फिर भी वह शांत रह रहा है तो इसका मतलब यह है कि बच्चा तनाव का शिकार हो रहा है।

अच्छे से नींद न आना

अगर बच्चों को परीक्षा का तनाव है तो उन्हें रात को नींद लेने में भी परेशानी होगी। तनाव के कारण नींद न आने के अलावा बच्चे को सोते समय भी बैचेनी हो सकती है। यदि परीक्षा के दौरान बच्चे को पर्याप्त नींद नहीं आ रही या फिर सोने के बाद भी बीच–बीच में बच्चा जाग रहा है तो यह भी तनाव का एक कारण हो सकता है।

हर समय पढ़ते रहना

पढ़ाई के दौरान बच्चों के मन में हर समय डर बना रहता है। अपना सिलेबस पूरा करने और अच्छे परिणाम लाने के लिए बच्चे कई बार ज्यादा पढ़ाई करने लगता है। कई बच्चे परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के बाद भी डरे रहते हैं और हर समय पढ़ते रहते हैं। ऐसे में यदि आपका बच्चा भी हर समय पढ़ रहा है तो यह भी एग्जाम का तनाव हो सकता है।

चिड़चिड़ा स्वभाव

तनाव के कारण बच्चे चिड़चिड़े भी हो सकते हैं। यदि आपका बच्चा छोटी–छोटी बात पर गुस्सा करता है तो यह भी तनाव के कारण हो सकता है। ऐसी स्थिति में आप उसे डांटने की जगह उसकी मदद करें और उसका पूरा साथ दें।

खाने–पीने में बदलाव

अगर एग्जाम के दौरान बच्चे के खाने–पीने की तरीकों में बदलाव हो रहा है तो आप इसे बिल्कुल भी नजरअंदाज न करें। यदि बच्चे बहुत कम या अचानक से ज्यादा खाने लगें हैं तो इसका अर्थ है कि वह तनाव का शिकार हो रहे हैं।

बच्चे की इम्यूनिटी और पाचन तंत्र मजबूत करेगा मोटा अनाज, पेरेंट्स करें डाइट में शामिल

बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं। ऐसे में बच्चे के स्वास्थ्य का ध्यान पेरेंट्स को ही रखना पड़ता है। बच्चे की डाइट में हैल्दी चीजें शामिल करके आप उन्हें स्वस्थ रख सकते हैं। शोध के अनुसार चावल, गेहूं के मुकाबले अगर जौ–बाजरा जैसे मोटे अनाज बच्चे की डाइट में शामिल कर सकते हैं। मोटा अनाज खाने से बच्चे का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। कई शोधों में यह बात सामने आई है कि छोटे बच्चों को मोटा अनाज खिलाकर कुपोषण से दूर रखा जा सकता है। तो चलिए आपको बताते हैं बच्चे को मोटा अनाज खिलाने से बच्चों को और क्या–क्या फायदे होंगे...

क्या होता है मोटा अनाज?

मोटा अनाज बच्चे के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। ज्वार, बाजरा, रागी, मक्का, जौ, कोदो, सामा, बाजरा, सांवा जैसे अनाज को मोटा अनाज माना जाता है। इसमें फाइबर की अच्छी मात्रा पाई जाती है जो पेट के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है।

मजबूत होता है पाचन

मोटे अनाज में फाइबर काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है, बच्चे को इसका सेवन करवाने से पेट में दर्द, कब्ज, उल्टी और गैस जैसी समस्याएं भी दूर होती है।

दूर होगी खून की कमी

मोटे अनाज जैसे बाजरा और रागी में आयरन काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। कई शोधों में यह बात सामने आई है कि रागी और बाजरे का सेवन करने से शरीर में आयरन की मात्रा पूरी होती है। प्रेग्नेंसी में रागी का सेवन करके आप एनीमिया की समस्या को भी दूर कर सकते हैं।

इम्यूनिटी होती है मजबूत

मोटे अनाज जैसे मक्के में विटामिन–ए, विटामिन–बी कॉम्पलेक्स काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व बच्चे की इम्यूनिटी मजबूत बनाने में सहायता करते हैं।

शारीरिक और मानसिक विकास होगा

मोटे अनाज में सोडियम, प्रोटीन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है, इसका सेवन बच्चे को करवाने से उनका मानसिक और शारीरिक विकास अच्छे से होता है।

मजबूत होंगे दांत और हड्डियां

मोटे अनाज में कैल्शियम काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। कैल्शियम युक्त आहार का सेवन करने से बच्चे के दांत और हड्डियां मजबूत होती हैं।

संक्षिप्त

सरकारी सार्वजनिक वित्तीय संस्थानों के कर्मचारियों की सैलरी बढ़ेगी

नई दिल्ली,एजेंसी। केंद्र सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र की सामान्य बीमा कंपनियों, नाबार्ड और आरबीआई के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए वेतन और पेंशन संशोधन को आधिकारिक मंजूरी दे दी है। इस फैसले से करीब 46,322 कर्मचारी और 46,000 से अधिक पेंशनभोगी व पारिवारिक पेंशनधारक लाभान्वित होंगे। सरकार ने इसे कर्मचारियों और पेंशनरों की सामाजिक सुरक्षा और वित्तीय कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया है। सार्वजनिक क्षेत्र की सामान्य बीमा कंपनियों के कर्मचारियों के लिए वेतन संशोधन 1 अगस्त 2022 से लागू होगा। इसमें कुल वेतन खर्च में 12.41प्रतिशत की वृद्धि और मूल वेतन व महंगाई भत्ते में 14प्रतिशत की बढ़ोतरी शामिल है। इसके अलावा अप्रैल 2010 के बाद नियुक्त कर्मचारियों के लिए एनपीएस योगदान को 10प्रतिशत से बढ़ाकर 14प्रतिशत कर दिया गया है। पारिवारिक पेंशन को भी संशोधित कर 30प्रतिशत की समान दर तय की गई है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के कर्मचारियों को वेतन और भत्तों में लगभग 20प्रतिशत की वृद्धि मिलेगी, जो 1 नवंबर 2022 से प्रभावी होगी। यह संशोधन ग्रुप ए, बी और सी के सभी कर्मचारियों पर लागू होगा। इसके साथ ही नाबार्ड के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की पेंशन को आरबीआई–नाबार्ड के पूर्व कर्मचारियों के समान किया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की पेंशन और पारिवारिक पेंशन में मूल पेंशन और महंगाई राहत पर 10प्रतिशत की वृद्धि की गई है। सरकार ने इसे वरिष्ठ नागरिकों और आश्रितों के लिए उचित और टिकाऊ सेवानिवृत्ति लाभ सुनिश्चित करने की दिशा में कदम बताया है। बीमा कंपनियों के लिए कुल खर्च करीब 8,170.30 करोड़ रुपये अनुमानित है। नाबार्ड के लिए वार्षिक वेतन खर्च में करीब 170 करोड़ रुपये की वृद्धि और कुल बकाया लगभग 510 करोड़ रुपये, जबकि पेंशन संशोधन पर एकमुश्त 50.82 करोड़ रुपये खर्च होगा। आरबीआई के लिए कुल वित्तीय प्रभाव करीब 2,696.82 करोड़ रुपये है, जिसमें बकाया के रूप में 2,485.02 करोड़ रुपये और सालाना 211.80 करोड़ रुपये का खर्च शामिल है।

अमेजन में क्या फिर होगी बड़ी छंटनी? 30 हजार कर्मचारियों पर खतरा, जानें कब शुरू हो सकती है कार्रवाई

नई दिल्ली,एजेंसी। दिग्गज ई–कॉमर्स कंपनी अमेजन अगले सप्ताह कर्मचारियों की दूसरी बड़ी छंटनी करने की योजना बना रही है। सूत्रों के मुताबिक, यह कदम कंपनी के लगभग 30,000 कॉरपोरेट कर्मचारियों की संख्या घटाने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

कंपनी ने अक्तूबर में करीब 14,000 व्हाइट–कॉलर कर्मचारियों की छंटनी की थी, जो कुल लक्ष्य का लगभग आधा हिस्सा था। अब आने वाली दूसरी छंटनी का आंकड़ा भी लगभग इसी स्तर का हो सकता है और इसकी शुरुआत मंगलवार से होने की संभावना है। हालांकि, योजना में बदलाव की संभावना से इनकार नहीं किया गया है। अक्तूबर में हुई छंटनी को अमेजन ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते प्रभाव से जोड़ा था। कंपनी ने कहा था कि एआई इंटरनेट के बाद सबसे बड़ा तकनीकी बदलाव है, जो कंपनियों को तेजी से नवाचार करने में सक्षम बना रहा है। हालांकि, बाद में सीईओ एंडी जेसी ने कहा कि कर्मचारियों की कटौती मुख्य रूप से वित्तीय या एआई कारणों से नहीं, बल्कि कंपनी की संस्कृति से जुड़ी है। उनके मुताबिक, अमेजन में नौकरशाही और प्रबंधन की कई परतें बढ़ गई हैं, जिससे कर्मचारियों की संख्या जरूरत से ज्यादा हो गई है। जैसी ने पहले ही संकेत दिया था कि एआई के कारण कंपनी की कॉरपोरेट वर्कफोर्स समय के साथ घटेगी। आज कई कंपनियां ।ए का इस्तेमाल कोडिंग, ऑटोमेशन और रोजमर्रा के कामों के लिए कर रही हैं, ताकि लागत कम हो सके और मानव श्रम पर निर्भरता घटे। अमेजन ने दिसंबर में आयोजित एडब्ल्यूएस क्लाउड कॉन्फ्रेंस में अपने नए एआई मॉडल्स को भी पेश किया था। अगर 30,000 कर्मचारियों की कटौती पूरी होती है, तो यह अमेजन के 30 साल के इतिहास की सबसे बड़ी छंटनी होगी। हालांकि, यह संख्या कंपनी के कुल 15.8 लाख कर्मचारियों का छोटा हिस्सा है, लेकिन कॉर्पोरेट कर्मचारियों का लगभग 10: होगी। अमेजन के अधिकांश कर्मचारी वेयरहाउस और फुलफिलमेंट सेंटरों में काम करते हैं। अक्तूबर में प्रभावित कर्मचारियों को 90 दिनों तक पेरोल पर रखा गया था, ताकि वे कंपनी के भीतर नई नौकरी ढूंढ सकें या बाहर अवसर तलाश सकें। यह अवधि सोमवार को समाप्त हो रही है।

भारत अब उभरता बाजार नहीं, मजबूत अर्थव्यवस्था

दावोस,एजेंसी। दुनिया की सबसे बड़ी वैकल्पिक परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी ब्लैकस्टोन ने भारत को लेकर बड़ा बयान दिया है। कंपनी के चेयरमैन और सीईओ स्टीफन ए श्वार्जमैन ने कहा कि भारत अब उभरता हुआ बाजार नहीं रहा, बल्कि वह पहले ही एक मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में उभर चुका है। विश्व आर्थिक मंच के दौरान दावोस में दिए एक इंटरव्यू में श्वार्जमैन ने कहा कि हम जानते हैं कि भारत उभर चुका है, और यह बात उन अधिकांश देशों के बारे में नहीं कही जा सकती, जिन्हें आमतौर पर उभरते बाजार कहा जाता है। उन्होंने बताया कि ब्लैकस्टोन फिलहाल एशिया–केंद्रित फंड के लिए बाजार में सक्रिय है और भारत कंपनी के लिए प्रमुख निवेश गंतव्य बना हुआ है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर वार्जमैन ने कहा कि इसका प्रभाव बिजली के आविष्कार और भाप इंजन जैसी ऐतिहासिक खोजों के बराबर होगा। उन्होंने कहा, जिस बदलाव में पहले 50 साल लगे, एआई उसे सिर्फ 10 साल में कर देगा। हालांकि उन्होंने माना कि एआई सेक्टर में कुछ कंपनियों का मूल्यांकन जरूरत से ज्यादा है।

टी20 विश्व कप से हटने पर बांग्लादेश को किस तरह सजा दे सकता है आईसीसी, नियम क्या कहते हैं?

दुबई,एजेंसी। टी20 विश्व कप 2026 को शुरू होने में अब बस कुछ ही दिन का समय बचा है। हालांकि, इससे पहले बांग्लादेश क्रिकेट के हठ ने बड़ा विवाद खड़ा कर दिया है। भारत और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में सात फरवरी से शुरू होने वाले इस टूर्नामेंट में बांग्लादेश की भागेदारी पर सवालिया निशान हैं। उसके ग्रुप स्टेज के चारों मैच भारत में हैं, लेकिन बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने भारत में खेलने से मना कर दिया है। इस जिद की वजह से उन पर टूर्नामेंट से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। आईसीसी ने बीसीबी को 21 जनवरी तक का समय दिया था, जिसे एक दिन और बढ़ा दिया गया था, लेकिन बीसीबी गुरुवार को भी भारत में नहीं खेलने की अपनी जिद पर अड़ा रहा। अब आईसीसी उसे टूर्नामेंट से बाहर कर सकता है। हालांकि, टूर्नामेंट से बाहर होने पर बांग्लादेश को भारी आर्थिक नुकसान हो सकता है। साथ ही क्रिकेट में भी इस टीम को फजीहत झेलनी पड़ सकती है। बीसीबी अध्यक्ष अमीनुल इस्लाम ने गुरुवार को अपना अंतिम फैसला सुनाते हुए कहा, हम अपनी योजना लेकर आईसीसी के पास वापस जाएंगे कि हम भारत में नहीं, श्रीलंका में खेलना चाहते हैं। उन्होंने हमें 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया था, लेकिन कोई वैश्विक संस्था ऐसा वास्तव में नहीं कर सकती। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप देखने वाले 200 मिलियन दर्शकों को खो देगा। ये उनका ही नुकसान होगा। आईसीसी श्रीलंका को संयुक्त मेजबान कह रहा है, जबकि वे संयुक्त मेजबान नहीं हैं। यह एक हाइब्रिड मॉडल है। आईसीसी मीटिंग में मैंने जो कुछ सुना, वो चौंकाने वाला था।

वहीं, आईसीसी ने पहले ही बांग्लादेश को बाहर करने को लेकर वोटिंग करा ली है। अगर बांग्लादेश जिद पर रहता है तो उसे टूर्नामेंट से बाहर कर दिया जाएगा और स्कॉटलैंड को जगह मिलेगी। आईसीसी भी अपने इस फैसले से पीछे हटने वाला नहीं है। हालांकि, आईसीसी के अंतिम स्टेटमेंट का अभी भी इंतजार है। आईसीसी भी इस पूरे विवाद के बीच बांग्लादेश की मांगों के आगे झुकने के मूड में नहीं दिख रहा, जिसका नतीजा अंततः बांग्लादेश के टी20 वर्ल्ड कप से निष्कासन के रूप में सामने आ सकता है। हालांकि, बांग्लादेश का यह बागी कदम केवल विश्व कप से बाहर होने भर तक सीमित नहीं रह सकता। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की शीर्ष संस्था से उन्हें सख्त परिणामों, दंडों और प्रतिबंधों का सामना भी करना पड़ सकता है। आईसीसी के नियमों के मुताबिक,

टूर्नामेंट से हटना एक ऐसी कार्रवाई है जो वित्तीय, प्रतिस्पर्धात्मक और कूटनीतिक पेनल्टी की पूरी सीरीज को सक्रिय कर देता है। 1996 वनडे विश्व कप के दौरान भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका, तीनों मेजबान थे। तब ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज ने श्रीलंका में श्रीलंका के खिलाफ अपने ग्रुप मैच खेलने से इनकार कर दिया था, तो उन्हें भी दंड का सामना करना पड़ा था। दोनों टीमों को अंक गंवाने पड़े थे। साथ ही श्रीलंका को दोनों मैचों में जीता हुआ घोषित किया गया था। इसके अलावा दोनों टीमों पर मैच में हिस्सा नहीं लेने के लिए पेनल्टी भी लगाई गई थी। श्रीलंका ने वह विश्व कप जीता था। हालांकि, तब सिर्फ बात एक मैच पर थी और यहां पूरा टूर्नामेंट लाइन पर है और आईसीसी का दंड और भी बड़ा हो सकता है। आइए जानते हैं कि बांग्लादेश को किस प्रकार नुकसान हो सकता है–

1. वित्तीय नुकसानरू बीसीबी को ग्रुप–स्टेज भागीदारी शुल्क के तौर पर 5 लाख से 7.5 लाख डॉलर यानी 4.5 करोड़ से लेकर सात करोड़ भारतीय रुपये तक का नुकसान हो सकता है। अगर बांग्लादेश सुपर–8 या सेमीफाइनल तक पहुंचता, तो 10 लाख से 25 लाख डॉलर यानी नौ करोड़ से 23 करोड़ भारतीय रुपये तक की अतिरिक्त पुरस्कार राशि भी खोनी पड़ सकती थी। इसके अलावा, आईसीसी की मेंबर पार्टिसिपेशन एग्रीमेंट के तहत, प्रतिबद्धता के बाद टूर्नामेंट से हटने पर 20 लाख डॉलर यानी 18 करोड़ भारतीय रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इसी के साथ, 2024–2027 साइकिल में बीसीबी को मिलने वाले 1.7 से दो करोड़ डॉलर के वार्षिक राजस्व हिस्से में भी कटौती की जा सकती है। कुल मिलाकर बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड की आर्थिक स्थिति बद से बदतर हो जाएगी। यह देश को क्रिकेट में लगभग 20 साल पीछे ढकेल देगा।

2. प्रतिस्पर्धात्मक झटके– रैंकिंग के आधार पर स्कॉटलैंड, ग्रुप–बी में बांग्लादेश की जगह लेगा, जिससे टूर्नामेंट की प्रतिस्पर्धात्मक संरचना प्रभावित नहीं होगी। बांग्लादेश की गैर–भागीदारी के कारण उनकी रैंकिंग पॉइंट्स भी छिन जाएंगे, जो भविष्य में होने वाले बड़े इवेंट्स, जैसे अगला वर्ल्ड कप और चौंपियंस ट्रॉफी के लिए ऑटोमैटिक क्वालिफिकेशन के लिहाज से बेहद अहम होते हैं। इसके चलते बांग्लादेश को लोअर–टीयर एसोसिएट्स के खिलाफ क्वालिफायर खेलने पर मजबूर होना पड़ सकता है। साथ ही, आईसीसी के वैश्विक टूर्नामेंट्स की मेजबानी के अधिकार भी हाथ से जा सकते हैं जिससे देश में क्रिकेट से जुड़ी स्थानीय ढांचा–विकास, स्पॉन्सरशिप डील्स और निवेश पर भी गंभीर असर पड़ेगा।

3. राजनयिक परिणामरू भारत और बांग्लादेश के बीच संबंधों में तनाव के कारण आगामी द्विपक्षीय सीरीज अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो सकती है। अगर आईसीसी इसे राजनीतिक प्रेरित मानता है न कि वास्तविक सुरक्षा चिंता, तो बीसीबी को पूरी तरह सस्पेंड किया जा सकता है, जिससे राष्ट्रीय टीम की गतिविधियां और अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव ठप हो जाएंगे। भारत और बांग्लादेश के बीच सीरीज से फैंस भी काफी संख्या में जुड़ते हैं और मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह सीरीज बांग्लादेश की अन्य सीरीज के मुकाबले 10 गुना ज्यादा रेवेन्य जनरेट करती है।

बिग बैश लीग में पाकिस्तान की फिर हुई किरकिरी! बाबर आजम का शर्मनाक रिकॉर्ड

सिडनी,एजेंसी। पाकिस्तान के टी20 स्टार बाबर आजम ने बिग बैश में बेहद धीमी बल्लेबाजी करते हुए ऐसा रिकॉर्ड बना दिया जो उनके करियर के लिए शर्मनाक साबित हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय मैचों के चलते वह टूर्नामेंट से बीच में पाकिस्तान लौट गए। हालांकि, स्टीव स्मिथ से टकराव और ड्रेसिंग रूम में अनबन, जैसी घटनाओं ने उनके बीबीएल सेशन को विवादित बना दिया। पाकिस्तान के स्टार बल्लेबाज बाबर आजम बिग बैश लीग में गए तो थे टी20 विश्व कप की तैयारी के लिए, लेकिन हुआ इसका उल्टा। बाबर पाकिस्तान की किरकिरी करवाकर वापस अपने देश लौटे हैं। वह राष्ट्रीय ड्यूटी की वजह से गुरुवार को सिडनी सिक्सर्स का साथ छोड़कर बीच टूर्नामेंट पाकिस्तान लौट गए। बाबर ने यह फैसला चौलेंजर के खिलाफ मुकाबले से 24 घंटे पहले लिया। इससे फ्रेंचाइजी के लिए टीम संयोजन मुश्किल हो गया। शुरुआत में उम्मीद थी कि बाबर पूरा टूर्नामेंट खेलेंगे क्योंकि उनका चयन श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज में नहीं हुआ था, लेकिन पाकिस्तान के आगामी अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों की तैयारी के चलते उन्हें बुला लिया गया। यह बाबर का बिग बैश लीग में पहला सीजन था और आंकड़े के हिसाब से यह सीजन उनके लिए निराशाजनक रहा। उन्होंने 11 मैचों में 202 रन बनाए और औसत सिर्फ 22.44 की रही। हालांकि, सबसे हैरान करने वाला आंकड़ा उनका 103.06 का स्ट्राइक रेट है, जो बिग बैश लीग इतिहास में 200 रन बनाने वाले बल्लेबाजों में सबसे कम है। इस पर ऑस्ट्रेलियाई मीडिया ने इसे टूर्नामेंट का सबसे धीमा प्रदर्शन बताते हुए सिक्सर्स के लिए बोझ तक कहा। इसलिए कई विशेषज्ञों का मानना है कि बाबर का जाना टीम के लिए वरदान साबित होने जैसा माना जा रहा है। टीम छोड़ने से पहले बाबर ने धन्यवाद देते हुए कहा, श्सबसे पहले, सिडनी सिक्सर्स का बहुत–बहुत शुक्रिया।

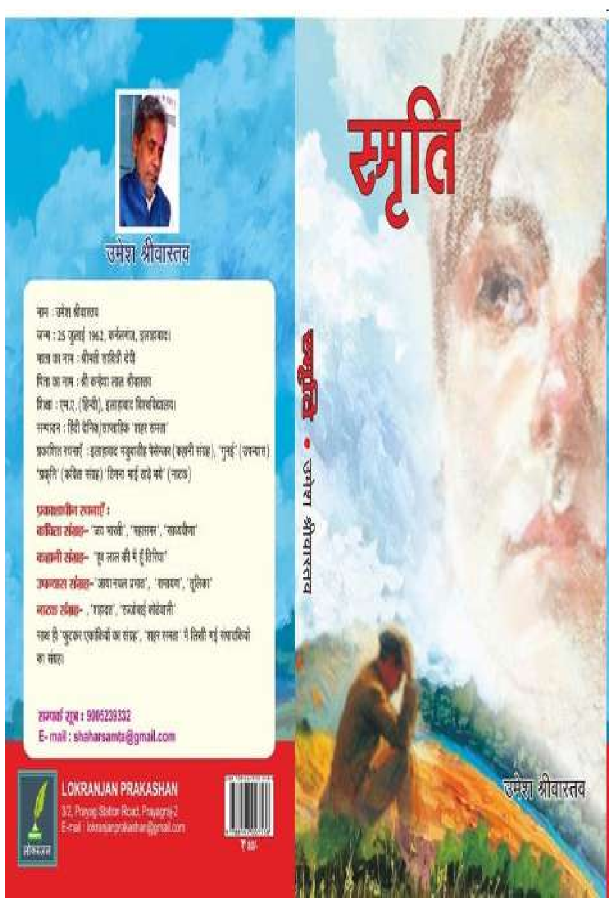

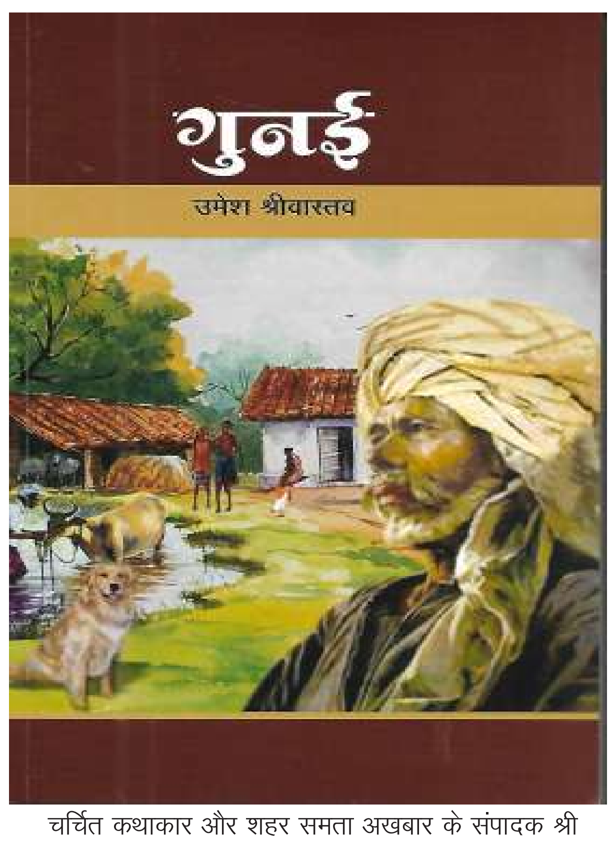

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

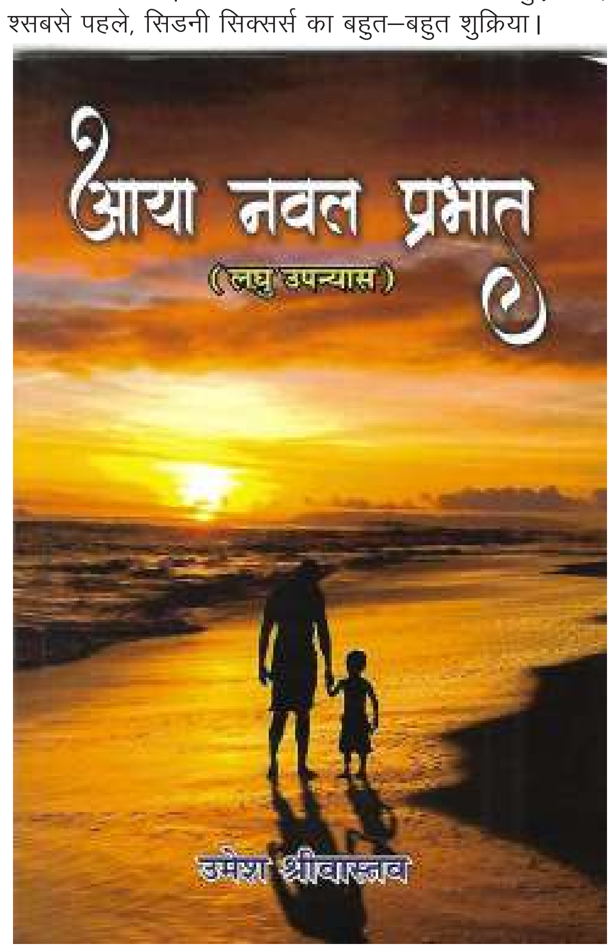

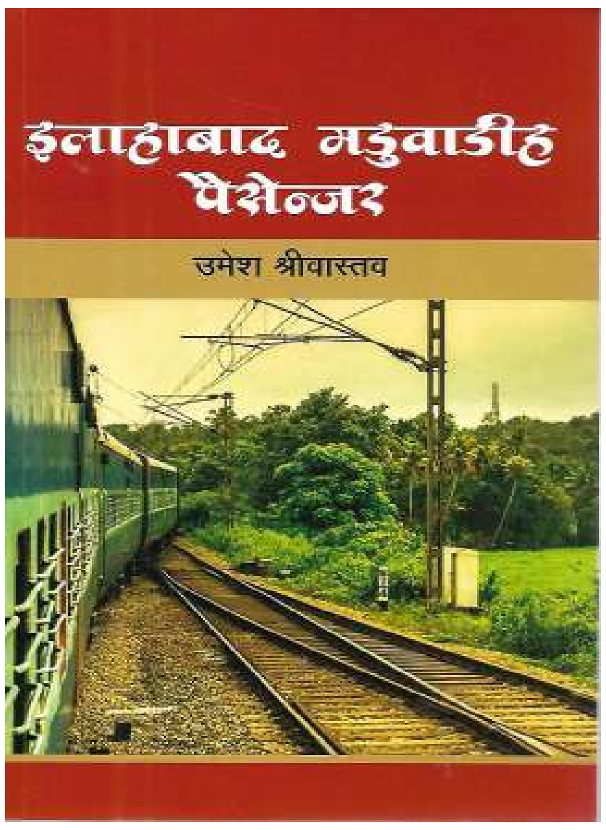

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

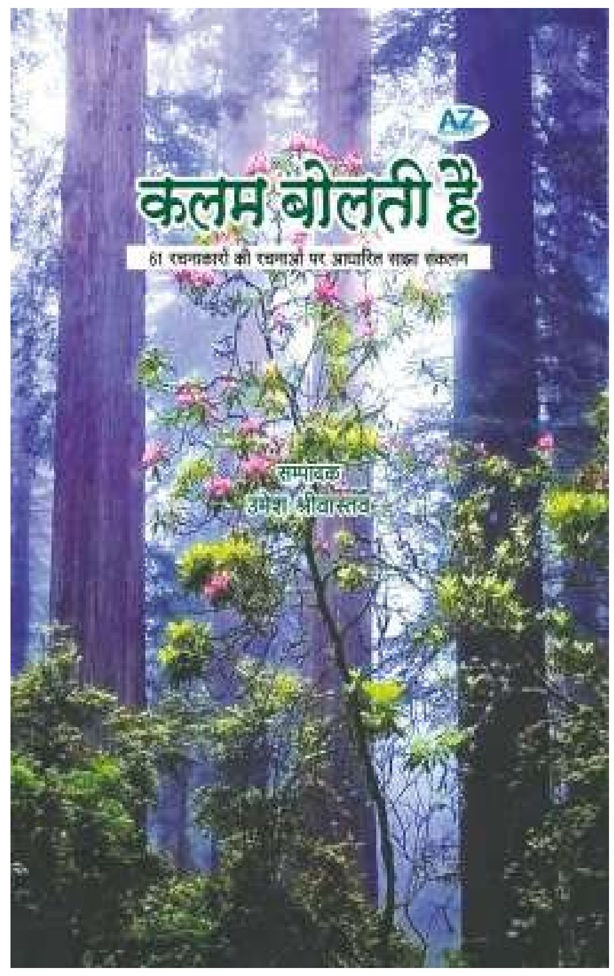

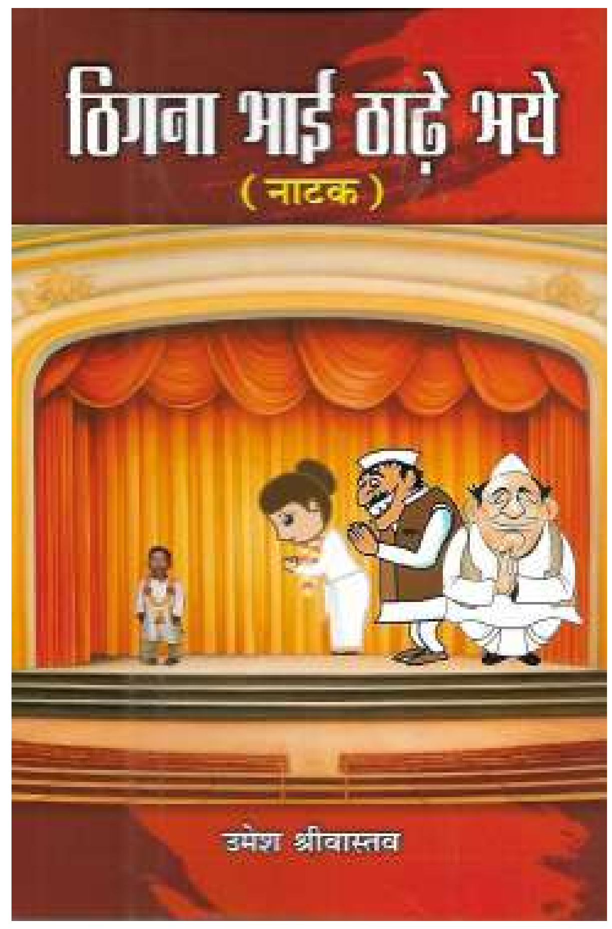

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

ईरान की अमेरिका को धमकी- ट्रिगर पर हमारी उंगली ट्रंप चेतावनी देकर बोले- हमारा जंगी बेड़ा...

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। ईरान के रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरजीसी) के कमांडर ने गुरुवार को इस्राइल और अमेरिका को चेतावनी दी कि वह उनकी ताकत को कम आंकने से बचें। उन्होंने कहा, हम ट्रिगर पर उंगली रखे हुए हैं। उनका यह बयान ऐसे समय में आया है, जब अमेरिका का विध्वंसक युद्धपोत यूएसएस अब्राहम तेहरान की ओर आगे बढ़ रहा है। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी एक बार फिर कार्रवाई करने की धमकी दी है। ईरानी सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के शासन के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों के बाद से दोनों देशों के नेताओं व अधिकारियों के बीच जुबानी जंग जारी है। इससे पहले ट्रंप कई बार चेतावनी दे चुके हैं कि ईरान पर नई सैन्य कार्रवाई का विकल्प खुला है। पिछले साल जून में 12 दिन के संघर्ष के दौरान अमेरिका ने इस्राइल का समर्थन किया था और उसमें शामिल हुआ था। दिसंबर के अंत में शुरू हुए विरोध प्रदर्शनों ने खामेनेई के नेतृत्व वाले शासन को हिलाकर रख दिया था। लेकिन सख्त कार्रवाई के बाद इस आंदोलन को दबा दिया गया है। कार्यकर्ताओं का कहना है कि इस कार्रवाई में हजारों लोग मारे गए हैं। आईआरजीसी के कमांडर जनरल मोहम्मद पकपूर ने इस्राइल और अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा कि वे ऐतिहासिक अनुभवों और 12 दिन के थोपे गए युद्ध से मिली सीख को ध्यान में रखते हुए किसी भी गलत आकल से बचें, ताकि उन्हें और ज्यादा दर्दनाक और अफसोसजनक अंजाम का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा, आईआरजीसी और ईरान पहले से कहीं ज्यादा तैयार हैं। हमारी उंगली ट्रिगर पर है और हम शीर्ष कमांडर–इन–चीफ के आदेशों को लागू करने के लिए पूरी तैयार हैं, जो हमें हमारे जीवन से भी ज्यादा प्रिय हैं। उनका इशारा खामेनेई की ओर था। उनकी यह टिप्पणी एक लिखित बयान में आई, जिसे सरकारी टेलीविजन पर प्रसारित किया गया। आईआरजीसी के राष्ट्रीय दिवस के मौके पर यह बयान जारी किया गया। इस बल का मकसद 1979 की इस्लामी क्रांति को अंदरूनी और बाहरी खतरों से बचाना है कार्यकर्ताओं का आरोप है कि विरोध प्रदर्शनों को कुचलने के लिए सख्त कार्रवाई में आईआरजीसी ने अग्रिम मोर्चे की भूमिका निभाई। इस संगठन को ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और अमेरिका सहित कई देशों ने आतंकवादी संगठन घोषित किया हुआ है और प्रतिबंधित किया हुआ है। ये देश यूरोपीय संघ और ब्रिटेन से भी ऐसे कदम उठाने की मांग कर रहे हैं।

संक्षिप्त

जापान की प्रधानमंत्री सनाए तकाइची ने भंग की संसद, 8 फरवरी को होंगे मध्यावधि चुनाव

टोक्यो, एजेंसी। जापान की प्रधानमंत्री सनाए तकाइची ने शुक्रवार को संसद के निचले सदन को भंग कर दिया, जिससे देश में 8 फरवरी को मध्यावधि चुनाव का रास्ता साफ हो गया है। तकाइची ने यह फैसला केवल तीन महीने के कार्यकाल के बाद लिया है। अक्टूबर में जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री चुनी गईं तकाइची को अब तक लगभग 70 प्रतिशत की ऊंची लोकप्रियता मिली है। माना जा रहा है कि वह इसी लोकप्रियता का लाभ उठाकर सत्तारूढ़ दल की स्थिति मजबूत करना चाहती हैं, जिसे हाल के वर्षों में भारी नुकसान झेलना पड़ा है। हालांकि, संसद भंग होने से उस बजट पर मतदान टल गया है, जिसका उद्देश्य कमजोर अर्थव्यवस्था को सहारा देना और बढ़ती महंगाई से निपटना था। 465 सदस्यीय निचले सदन के भंग होने के साथ ही 12 दिनों का चुनाव प्रचार अभियान शुरू होगा, जिसकी औपचारिक शुरुआत मंगलवार से होगी। प्रधानमंत्री तकाइची ने कहा कि वह चाहती हैं कि जनता तय करे कि उन्हें प्रधानमंत्री बने रहना चाहिए या नहीं। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह इस चुनाव को अपने राजनीतिक भविष्य से जोड़ रही हैं। सख्त रुख वाली रूढ़िवादी नेता तकाइची अपने पूर्ववर्ती शिगेरु इशिबा से अलग नीतियों को सामने रखना चाहती हैं। उनके एजेंडे में ज्यादा सरकारी खर्च, सैन्य ताकत में इजाफा और कड़ी आव्रजन नीति शामिल है, ताकि जापान को श्मजबूत और समृद्धश बनाया जा सके। हालांकि तकाइची की छवि युवा मतदाताओं में लोकप्रिय है, लेकिन सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) अभी भी राजनीतिक फंडिंग घोटाले के असर से उबर रही है। इसके चलते कई पारंपरिक मतदाता उभरती दक्षिणपंथी विपक्षी पार्टियों की ओर रुख कर चुके हैं। प्रधानमंत्री का लक्ष्य इस चुनाव के जरिए निचले सदन में मजबूत बहुमत हासिल करना है, ताकि उनकी सरकार बिना विपक्ष पर निर्भर हुए अपने एजेंडे को आगे बढ़ा सके।

आज अबूधाबी में रूस–यूक्रेन व अमेरिका के बीच त्रिपक्षीय बैठक ट्रंप से मुलाकात के बाद जेलेंस्की खुश

दावोस, एजेंसी। रूस–यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने की कोशिशों के तहत रूस, यूक्रेन और अमेरिका के वार्ताकार शुक्रवार से अबू धाबी में त्रिपक्षीय बैठक करेंगे। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि यह बैठक शांति प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे लंबे समय से जारी संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में प्रगति की उम्मीद है। जेलेंस्की ने बताया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ दावोस में हुई बातचीत के बाद यूक्रेन के लिए सुरक्षा गारंटी से जुड़े प्रावधानों को अंतिम रूप दिया जा चुका है। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि युद्ध का सबसे संवेदनशील मुद्दा क्षेत्रीय विवाद अब भी अनसुलझा बना हुआ है। अमेरिकी पक्ष की ओर से विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और जारेड कुश्नर मॉस्को में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बातचीत के बाद सीधे अबू धाबी पहुंचेंगे। इन वार्ताओं में सैन्य स्तर पर संवाद और युद्ध के बाद आर्थिक पुनर्निर्माण से जुड़े प्रस्तावों पर चर्चा होने की संभावना है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के साथ उनकी अच्छी बैठक हुई है और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के लिए उनका साफ संदेश है कि युद्ध खत्म होना चाहिए। इस जंग में अब तक बहुत लोग मारे जा चुके हैं। ट्रंप ने बताया कि अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल जल्द ही पुतिन से मुलाकात करेगा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ के साथ बृहस्पतिवार को वार्ता से पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि वह जब्त की गई संपत्तियों का एक हिस्सा रूस–यूक्रेन शांति समझौते के बाद युद्धग्रस्त यूक्रेन के पुनर्निर्माण के लिए देने को तैयार हैं। उन्होंने कहा, अमेरिका में जब्त की गई हमारी परिसंपत्तियों की बची धनराशि का इस्तेमाल संधि होने के बाद यूक्रेन के पुनर्निर्माण में किया जा सकता है।

ईरान पर कितनी खतरनाक होगी अमेरिका-इस्राइल की सैन्य कार्रवाई, क्यों नहीं झुक रहे हैं खामेनेई?

एजेंसी/मध्य एशिया किसका होगा? अमेरिका–इस्राइल का या फिर ईरान की मनमानी चलेगी? बड़ा सवाल है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप हलांकि युद्ध के पक्षधर नहीं रहते। उनके पहले पहले कार्यकाल में अमेरिका कोई युद्ध नहीं लड़ा था। धमकाते रह गए थे। इस बार ट्रंप धमकी से आगे निकले हैं। सामरिक रणनीति और कूटनीति के जानकार कहते हैं कि दूसरे कार्यकाल में वह ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई का विकल्प अपना सकते हैं। ट्रंप ने बी–52 बंबर का 2025 में ईरान पर सीमित इस्तेमाल किया था। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ईरान को चेतावनी, धमकी से बाज नहीं आ रहे हैं। इसके जवाब में ईरान के सर्वोच्च नेता अया तुल्लाह अली खामेनेई उतना ही तीखा पलटवार कर रहे हैं। खामेनेई के पलटवार में गजब की आक्रमकता रहती है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाइल नम्बर 9190052 39332
,919450482227

शांति बोर्ड में शामिल होकर अपने ही घर में घिरे शहबाज, विपक्ष का तंज- क्या अब नेतन्याहू संग बैठेंगे

इस्लामाबाद, एजेंसी। अमेरिका के साथ गलबहियां करने के चक्कर में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ अपने ही घर में सवालों के बीच घिर गए हैं। उन्हें विपक्ष की कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड की अध्यक्षता में बने शांति बोर्ड में शामिल होने के लिए शरीफ ने शरीफ ने गुरुवार को हस्ताक्षर किए। पाकिस्तान समेत 19 देशों के नेताओं ने दावोस में इस समूह के चार्टर के रूप में अपना–अपना नाम दर्ज कराया। इस दौरान जब शहबाज का हस्ताक्षर करने का वक्त आया तो वह ट्रंप के बगल में बैठक मुस्कुराते नजर आए। हालांकि, इस फैसले ने पाकिस्तान के अंदर बवाल मचा दिया। आइए पहले जानते हैं कि यह शांति बोर्ड क्यों बनाया गया है और इसको बनाने का विचार कहां से आया है। शांति बोर्ड बनाने का विचार सबसे पहले गाजा युद्ध के दौरान आया, जब अमेरिकी ने अपनी शांति योजना को पेश किया। यह बोर्ड गाजा में शांति की निगरानी करने के लिए बनाया गया। लेकिन यह बोर्ड अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के समाधान के लिए एक मध्यस्थ की भूमिका की दिशा में आगे बढ़ता दिख रहा है। बताया जा रहा है कि ट्रंप इसके माध्यम से अपना खुद का संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) बना रहे हैं। विपक्षी पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के अध्यक्ष गोहर अली खान ने इस फैसले पर अफसोस जताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री शरीफ ने किसी परामर्श के शांति बोर्ड में शामिल होने का फैसला किया। उन्होंने कहा, कल विदेश मंत्रालय ने कहा कि वह शांति बोर्ड में शामिल हो गया है। सरकार ने संसद को नजरअंदाज किया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शांति बोर्ड में शामिल होने से पहले उसकी शर्तों के बारे में संसद को बताया जाना चाहिए था। उन्होंने कहा, क्या आप हमास को निरस्त्र करने में भूमिका निभाएंगे? अगर यह संयुक्त राष्ट्र (यूएन) का कोई निकाय होता, तो सरकार खुद से कदम उठा सकती थी। लेकिन शांति बोर्ड कोई यूएन का निकाय नहीं है। पाकिस्तान के प्रमुख अखबार डॉन की खबर के मुताबिक, पीटीआई के वरिष्ठ नेता असद कैसर ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सरकार ने इतने संवेदनशील मुद्दे पर सर्वसम्मति से फैसला लेने की जहमत नहीं उठाई। उन्हें इस पर संसद में चर्चा करना चाहिए थी, ताकि विश्व समुदाय में यह धारणा बने कि पाकिस्तान में लोकतंत्र है।

ब्राजील के राष्ट्रपति लूला ने पीएम मोदी से फोन पर की बातचीत

साओ पाउलो, एजेंसी। ब्राजील के राष्ट्रपति लुईज इनासियो लूला दा सिल्वा ने गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ फोन पर हुई बातचीत में दोनों नेताओं ने आगामी ब्राजील–भारत बिजनेस फोरम के महत्व पर जोर दिया। यह फोरम लूला के भारत के राजकीय दौरे के दौरान आयोजित होगा और इसी अवसर पर नई दिल्ली में एपेक्स–ब्राजील कार्यालय का उद्घाटन भी किया जाएगा। एक्स पर साझा किए गए पोस्ट में राष्ट्रपति लूला ने बताया कि वह 19 से 21 फरवरी के बीच नई दिल्ली का राजकीय दौरा करेंगे, जिसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय एजेंडे को आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि हमने 19 से 21 फरवरी के बीच नई दिल्ली में होने वाले मेरे राजकीय दौरे और द्विपक्षीय एजेंडे पर चर्चा की। राष्ट्रपति ने बताया कि हमने ब्राजील–भारत बिजनेस फोरम के महत्व को रेखांकित किया, जो मेरी यात्रा के दौरान आयोजित होगा। इसी के साथ नई दिल्ली में एपेक्स कार्यालय का उद्घाटन भी होगा। उन्होंने कहा कि हमने वैश्विक हालात पर भी विचार साझा किए और गाजा व दुनिया में शांति, बहुपक्षवाद और लोकतंत्र की रक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी राष्ट्रपति लूला से बातचीत के बाद कहा कि भारत और ब्राजील के बीच करीबी सहयोग ग्लोबल साउथ के साझा हितों को आगे बढ़ाने के लिए बेहद अहम है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वह ब्रिक्स साझेदार ब्राजील के राष्ट्रपति का भारत में स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर लिखा, श्राष्ट्रपति लूला से बात करके खुशी हुई। हमने भारत–ब्राजील रणनीतिक साझेदारी की मजबूत गति की समीक्षा की, जो आने वाले वर्ष में नई ऊंचाइयों को छूने को तैयार है। हमारा करीबी सहयोग ग्लोबल साउथ के साझा हितों को आगे बढ़ाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं जल्द ही भारत में उनका स्वागत करने के लिए उत्सुक हूं।" दिसंबर 2025 में ब्राजील की आधिकारिक यात्रा के दौरान भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने राष्ट्रपति लूला के मुख्य सलाहकार सेल्सो अमोरिम और रक्षा मंत्री जोजे मूसियो मोंटेइरो से मुलाकात की। भारतीय नौसेना के बयान के अनुसार, इन बैठकों में भारत–ब्राजील रक्षा सहयोग के विस्तार, रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने और द्विपक्षीय रक्षा संबंधों को आगे बढ़ाने पर व्यापक चर्चा हुई। बयान में कहा गया कि दोनों पक्षों ने रक्षा उद्योग सहयोग और क्षमता निर्माण से जुड़े अवसरों पर भी विचार किया, ताकि दीर्घकालिक सामंजस्य और साझा सुरक्षा उद्देश्यों को समर्थन मिल सके। साथ ही दक्षिण अटलांटिक, व्यापक इंडो–पैसिफिक और ग्लोबल साउथ की सामूहिक भूमिका सहित क्षेत्रीय व वैश्विक मुद्दों पर चर्चा हुई, जिससे एक सुरक्षित, स्थिर और नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए भारत–ब्राजील की साझा दृष्टि सामने आई।

अप्रवासन अधिकारियों ने पांच साल के बच्चे को हिरासत में लिया, स्कूल का दावा- चारे की तरह किया इस्तेमाल

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में संघीय अप्रवासन अधिकारी अवैध अप्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई में इस कदर पागल हो गए हैं कि उन्होंने मिनेसोटा में एक पांच साल के बच्चे को हिरासत में ले लिया। बच्चा जिस स्कूल में पढ़ता है, उसके अधिकारियों ने भी घटना पर कड़ी नाराजगी जाहिर की और कहा कि बच्चे को चारे की तरह इस्तेमाल किया गया। बच्चे और उसके पिता को टेक्सास में एक डिटेंशन सेंटर में रखा गया है। पहली बार नहीं है कि अप्रवासन अधिकारियों ने किसी बच्चे को पकड़ा हो, इससे पहले हाल के हफ्तों में मिनियापोलिस में भी तीन बच्चों को डिटेंशन सेंटर में रखा गया है। स्कूल की सुपरिंटेंडेंट जेना स्टेनविक ने बताया कि संघीय अप्रवासन एजेंट्स ने पांच साल के लियम कोनेजो रामोस को कार से हिरासत में लिया, जब वह मंगलवार दोपहर अपने पिता के साथ अपने घर जा रहा था।

इसके बाद अधिकारी बच्चे को उसके घर लेकर गए और उन्होंने उससे घर का दरवाजा खटखटाने को कहा।

स्टेनविक ने आरोप लगाया कि एजेंट्स ने बच्चे को चारे की तरह इस्तेमाल किया, ताकि घर में मौजूद अन्य लोगों को हिरासत में लिया जा सके।

स्टेनविक ने बताया कि पीड़ित परिवार अमेरिका में शरणार्थी है और इस देश में शरण लेने के लिए उनका अदालत में केस चल रहा है। फिलहाल उन्हें देश छोड़ने का कोई आदेश नहीं दिया गया है। वहीं अप्रवासन विभाग ने आरोपों को खारिज कर दिया है। अप्रवासन विभाग की प्रवक्ता ने बताया कि विभाग बच्चे के पिता एड्रियन एलेक्जेंडर कोनेजो एरियास को पकड़ने के लिए ऑपरेशन चला रहा था, जो इक्वाडोर से आकर अमेरिका में अवैध रूप से रह रहा है। जैसे ही अप्रवासन विभाग के एजेंट्स उसे पकड़ने पहुंचे, तो वह बच्चे को छोड़कर पैदल ही मौके से भाग गया। इसके बाद एजेंट्स बच्चे को लेकर उसके घर गए और उसके पिता को हिरासत में ले लिया। हमने परिवार को विकल्प दिया था कि वे बच्चे को अलग रख सकते हैं या फिर अपने साथ ही, तो परिजनों ने बच्चे को अपने साथ डिटेंशन सेंटर में रखने का फैसला किया। फिलहाल पिता और पुत्र दोनों हिरासत में हैं।

दावोस से वॉशिंगटन लौटे राष्ट्रपति ट्रंप, बोले- शांति बोर्ड के साथ काम करे संयुक्त राष्ट्र

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) में हिस्सा लेने के बाद शुक्रवार (स्थानीय समय) को वॉशिंगटन डीसी लौटे। इस दौरान उन्होंने कहा कि शांति बोर्ड ऐसी पहल है, जैसी दुनिया ने पहले कभी नहीं देखी– बेहद खास। ट्रंप ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र (यूएन) को गाजा और अन्य संघर्षों पर बने नए शांति बोर्ड के साथ काम करने की जरूरत है। उन्होंने तर्क दिया कि यह वैश्विक संस्था अपनी क्षमता के अनुरूप काम नहीं कर पाई है और यह नई पहल संयुक्त राष्ट्र के लिए अच्छी चीज हो सकती है। ट्रंप ने कहा, मुझे नहीं पता कि मैं यह चाहता हूं या नहीं, लेकिन यह पहल गाजा में बहुत अच्छी काम करेगी और शायद दूसरी चीजों पर भी। आप जानते हैं..यह गाजा से आगे भी हो सकता है। हम संयुक्त राष्ट्र के साथ काम करेंगे। मैंने हमेशा कहा है कि संयुक्त राष्ट्र में बहुत क्षमता है।

लेकिन वह उस पर खरा नहीं उतरा। मैं आठ युद्धों (को रोकने) की बात करता हूं और मैंने कभी उससे (यूएन) बात नहीं की। आप सोचते होंगे कि मैंने उससे (यूएन) बहुत बात की होगी। लेकिन संयुक्त राष्ट्र में बहुत क्षमता है। मुझे लगता है कि शांति बोर्ड के साथ काम करना संयुक्त राष्ट्र के लिए अच्छी बात होगी। ट्रंप ने विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) में औपचारिक रूप से शांति बोर्ड की शुरुआत की। उन्होंने इसके चार्टर पर हस्ताक्षर किए और इसे वैश्विक संघर्षों के समाधान की दिशा में एक बड़ा कदम बताया। इससे पहले ट्रंप ने संयुक्त राष्ट्र पर निशाना साधा था और कहा था कि उसकी अक्षमता के कारण ही उन्हें गाजा के लिए शांति बोर्ड बनाने का फैसला करना पड़ा, ताकि पश्चिम एशिया में संघर्ष खत्म करने के लिए 20–सूत्रीय शांति योजना को लागू किया जा सके। मीडिया को संबोधित करते हुए ट्रंप ने कहा, हमने अभी शांति बोर्ड बनाया है, जो मुझे लगता है कि बहुत शानदार होने वाला है। काश संयुक्त राष्ट्र और ज्यादा कर पाता। काश हमें शांति बोर्ड की जरूरत ही न पड़ती। मैंने जितने भी युद्ध सुलझाए, संयुक्त राष्ट्र ने एक भी युद्ध में मेरी मदद नहीं की।

गगन थापा होंगे नेपाली कांग्रेस से पीएम पद के उम्मीदवार, आज की जाएगी औपचारिक घोषणा

काठमांडू, एजेंसी। नेपाली कांग्रेस नवनिर्वाचित सभापति गगन थापा (49) को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने जा रही है। यह घोषणा शुक्रवार को पार्टी की केंद्रीय समिति की बैठक में की जाएगी। यह पार्टी के केंद्रीय कार्यालय काठमांडू के सानेपा में होगी।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।